अध्याय तीन
अनामिका का व्यक्तित्व और कृतित्व

हिन्दी साहित्य जगत में अनामिका आज किसी परिचय की मोहताज नहीं है। एक श्रेष्ठ रचनाकार होने के साथ स्त्री विमर्शकारों की श्रेणी में भी वह पहली पंक्ति में अपनी उपस्थिति दर्ज कराती है। स्त्री विमर्श के क्षेत्र में इनके गहन चिन्तन ने स्त्री विमर्श को एक नया आयाम दिया है। स्त्रीवादी परिपेक्ष्य में इनकी कविता अपना विशिष्ट महत्व रखती है। अनामिका की पहचान एक नारीवादी कवयित्री के रूप में बन चुकी है। वे अपने परिवेश को हिन्दुस्तानी मध्यमवर्गीय नारी के दृष्टीकोण से देखते हुए उसके दबाव और टकराहट को झेलते हुए अपनी निजता को भी परिभाषित करती है। उनकी रचनाओं में यथास्थिति चित्रण के साथ-साथ नारी चेतना के आह्वान का स्वर भी सुनाई पड़ता है।

व्यक्तित्व-

जन्म 17 अगस्त 1961, मुज्जफरपुर बिहार में जन्मी अनामिका अंग्रेजी साहित्य की व्याख्याता होने के बावजूद हिन्दी साहित्य के प्रति अपने रूझान के कारण हिन्दी साहित्य को समृद्ध करती आ रही है। आलोचना, विमर्श के क्षेत्र में उनका लेखन अपनी स्त्री विशिष्ट पहचान लिये हुए है। प्रिन्ट मीडिया के लिए लेखन कार्य के अतिरिक्त अनामिका रेडियो और टेलीविजन जैसे इलेक्ट्रोनिक माध्यम के लिए भी अनवरत लिखती रही है। जनसत्ता और राष्ट्रीय सहारा में छपने वाले उनके स्तंभ प्रभुद्ध पाठकों की प्रशंसा पाते रहे है। इन्दिरा गांधी खुला विश्वविद्यालय में अंग्रेजी, एम.फिल. का पाठ्यक्रम, एन.सी.ई.आर.टी. में सर्जनात्मक लेखन का पाठ्यक्रम और महत्मा गांधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय में स्त्री विमर्श का पाठ्यक्रम रेखांकित करने में अनामिका की बड़ी भूमिका रही है। साहित्य अकादमी के लिए प्रमुख कवयित्रियों का स्त्री वादी संकलन भी इन्होंने तैयार किया है।

माता-पिता-

अनामिका के पिता का नाम श्यामनंदन किशोर तथा माता का नाम डॉ. आशा किशोर है। आपके पिता बिहार विश्वविद्यालय के कुलपति रहे है और माता जी पढ़ी लिखी होने के कारण एक समर्पित गृहलक्ष्मी रही।

बचपन-

उनका बचपन घर में अकेले रहने के कारण पुस्तकालय और पुस्तकों की अनमोल मैत्री के बीच बीता, जिसमें साहित्य के बीज बौने के लिए एक आधारशीला सी भूमिका निभाई। आठ दस वर्ष की आयु में ही उन्होंने तुकबन्दी की जो जोड़ तोड़ शुरू की वह आज तक अपने परिष्कृत, परिपक्व रूप में हिन्दी साहित्य जगत को समृद्ध करती आ रही है।

सेंन्ट फ्रांसीस जेवीयर्स एकेडमी नामक स्कूल में प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त करने के समय ही उन्होंने अनेक काव्य सर्जन प्रतियोगिताओं में भाग लिया। जिसके फलस्वरूप हाईस्कूल में पढ़ते समय ही उनका पहला कविता संग्रह शीतल स्पर्श एक धूप को, 1975 में प्रकाशित हुआ। आरम्भिक काल की कविताओं में वह प्रकृति की ओर अधिक आकृष्ट रही। 20 वर्ष की आयु में वह उच्च शिक्षा प्राप्त करने के उद्देश्य से दिल्ली आयी और अध्ययन पूर्ण किया।

शोध: अनामिका ने अंग्रेजी और हिंदी में पीएच.डी. की हैं। इसके उपरान्त अनामिका ने डी. लिट. की उच्चतर उपाधि प्राप्त की।

1. इन क्रिटिसिज्म डाउन द एजेजे - अंग्रेजी
2. निराला पर आंग्ल प्रभाव - हिन्दी
3. ट्रीटमेण्ट ऑफ लव एंड इन पोस्ट-वार विमेन पोएटस- डी.लिट. अंग्रेजी

वर्तमान समय में दिल्ली विश्वविद्यालय के सत्यवती कॉलेज में अंग्रेजी की सीनियर रीडर है।

विवाह-

अनामिका के व्यक्तित्व पर उनके लेखक माता पिता और बडे भाई अभिताभ राजन का गहरा प्रभाव है। उनका विवाह संफदरगंज अस्पताल में नैफ्रोलॉजी विभाग के अध्यक्ष डॉ. विन्दु अभिताब से 24 जून 1985 को हुआ। दोनों बेटों उन्नयन और उत्कर्ष से उनका जो अन्तरंग भरा नाता है। वह उनकी रचनाओं में भी झलकता है। अनामिका हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में यथार्थ से जुड़ी एक संवेदनशील रचनाकार है, जिन्होंने अपने रचनात्मक जीवन में सदा अपने परिवेश से संपृक्ति बनाये रखी है। वे अपने परिवेश से प्राय: बाहर नहीं जाती लेकिन उस परिवेश में वाश बेसिंग से लेकर मंगल शनीचर और चौराहे पर अचानक मिल जाने वाले ईश्वर तक शमिल है।

कथ्य की दृष्टि से देखा जाये तो मौजूदा स्त्रीवादी लेखन में अनामिका ने अपनी एक अलग उपस्थिति दर्ज की है। उनके पास दृश्य बन्दो को सजीव करने वाली भाषा है। बिम्बधर्मिता पर उनकी अच्छी पकड़ है। भाषा की यह विशिष्टता उनकी अपनी विशिष्टता है। समसामयिक हिन्दी काव्य जगत के वरिष्ठ रचनाकार केदारनाथ सिंह उनके रचनाकर्म के बारे में कहते है- वे प्राय: गद्य की जमीन से शब्दों को उठाती है और उन्हें कथन की इसी भंगिमा के साथ तह पर तह जमाती है, इसलिए उनकी भाषा और कविता का पूरा मिजाज प्रचलित काव्य भाषा से थोड़ा अलग है।

जीविकोपार्जन तथा कार्यक्षेत्र-

अनामिका की नियुक्ति सर्वप्रथम दिल्ली विश्वविद्यालय के सत्यवती कॉलेज में अंग्रेजी लेक्चरर के पद पर हुई। वे अब इसी पर पद सीनियर रीडर है।

साहित्य सृजन तथा प्रभाव-

अनामिका के व्यक्तित्व पर उनके माता पिता के साथ इकलौते बड़े भाई अमिताभ राजन का गहरा प्रभाव पड़ा है। अनामिका अपने बड़े भाई अमिताभ राजन की प्रेरणा से ही उच्च शिक्षा के लिए दिल्ली आई। अमिताभ राजन का अपनी बहन अनामिका से अनुराग का रिश्ता इतना गहरा है कि हर जगह से दुनिया की बेहतरीन

किताबें अपनी बहन के लिए लाते और फिर चिट्ठियों में उन किताबों पर चर्चा होती थी।

उपलब्धि के अन्तर्गत उनके ऊपर दो शोध को लिया जा सकता है। अनामिका के काव्य पर सम्पन्न शोध :-

1. अनामिका की कविताओं में स्त्री का मुक्ति संघर्ष, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली 2006

2. अनामिका की कविताओं का संबोध्य, केन्द्रीय विश्वविद्यालय, हैदराबाद, 2008

सम्मान-

हिन्दी साहित्य जगत को अपनी रचनाओं से समृद्ध करने वाली अनामिका अनेक सम्मानों से अलंकृत है।

1- राज भाषा पुरस्कार 1987

2- भारत भूषण अग्रवाल पुरस्कार 1995

3- साहित्यकार सम्मान 1997

4- ऋतुराज सम्मान

5- गिरिजा कुमार माथुर पुरस्कार 1998

6- परम्परा सम्मान 2001

7- मून मून सरकार पुरस्कार 2003

8- साहित्य सेतु सम्मान 2004

9- केदार सम्मान 2008

10- शमशेर सम्मान

11- साबित्री बाई फूले सम्मान,

12- मुक्तिबोध सम्मान

13- महादेवी सम्मान

14- स्पंधनकृति पुरस्कार 2010

रचनाएँ -

अनामिका बहुमुखी प्रतिभा की धनी है। आलोचना हो या संस्मरण, निबंध हो अथवा कथा साहित्य अनामिका की लेखनी सभी विधाओं में स्पष्ट रूप चलती है। गद्‌य विधा के प्रति अपने आकर्षण को वह इस प्रकार प्रकट करती है- लोग जीवन की अंतरंग गपशप में गद्‌य की विशेष रूचि है और मेरी भी। इसलिए बार बार गद्‌य की ओर मुड़ती हूँ.... गद्‌य मेरी कविता का खुला खुला कलोरेज है और शायद सीढ़ी घर भी। यहाँ पर मैं उनके साहित्य को विधाओं के रूप और स्वरूप के आधार पर उल्लेख कर रहा हूँ।

काव्य संग्रह-

1. शीतल स्पर्श एक धूप को 1975,
2. गलत पते की चिट्ठी 1979,
3. समय के शहर में 1990,
4. बीजाक्षर 1993,
5. अनुष्टुप 1998,
6. कविता में औरत 2004,
7. खुरदुरी हथेलिया 2005,
8. दूब धान 2007,
9. मेन आर नाट बिओड रिपेयर 2009,
10. थेरी गाथा : टोकरी में दिगन्त,

11. पानी को सब याद था

कहानी

1. प्रतिनायक।

लघु उपन्यास

- पर कौन सुनेगा - वाणी प्रकाशन, दिल्ली (1982)
- मन कृष्ण मन अर्जुन - साहित्य रत्नाकर (1995)
- अवान्तर कथा - किताब घर (2000)

उपन्यास

- दस द्वारे का पिंजरा - राजकमल प्रकाशन (2007)
- तिनका तिनके के पास - वाणी प्रकाशन, दिल्ली (2007)

संस्मरण

1. एक वो शहर था
2. एक थे शेक्सपियर
3. एक थे चार्ल्स डिकेंस
4. दस द्वारे का पिंजरा

अनुवाद-

1. नागमंडल (गिरिश कर्नाड़)
2. अब भी बंसत को तुम्हारी जरूरत है, (रिल्के की कविताएँ)
3. एफ्रो इंग्लिश पोएम्स
4. अटलांट के आर पार (समकालीन अंग्रेजी कविता)

5. कहती हैं औरतें (विश्व साहित्य की स्त्रीवादी कविता)

6. भाषिक पुनर्वास

विमर्श-

- स्त्रीत्व का मानचित्र
- मन माँजने की जरूरत
- पानी जो पत्थर पीता है
- स्त्री विमर्श का लोकपक्ष
- त्रिया चरित्र : उत्तरकाण्ड
- स्वाधीनता का स्त्री-पक्ष

आलोचना-

1- पोस्ट एलिएट पोएट्री : अ वॉइज फ्रॉम कंफ्लिक्ट टु आइसोलेशन

2- डन क्रिटिसिज्म डाउन दि एजेज,

3- ट्रीटमेन्ट ऑव लव ऐंड डेथ इन पोस्ट वार अमेरिकन विमेन पोएट्स,

4- ट्रांसेलेटिंग रेशियल मेमरी।

5- वैहर किंग फिशर केच फायर फेमिनिश्ट पॉएटिक्श

अनामिका का पद्य साहित्य-

शीतल स्पर्श एक धूप को-

यह अनामिका का प्रथम काव्य संगह है। जो 1975 में प्रकाशित हुआ था। इसमें कुल 67 (सडसठ) कविताएँ संकलित है। इसकी संकलित कविताएँ- अम्बर का मलेरिया, बरसात का एक दिन, हवा को एक निवेदन, ढलती संध्या में, इन्द्रधनुषी, सांध्य नभ, आषाढ़ में पौष में नभ का जुमार, नहा रहा नील गगन, कुछ अनुत्तरित

प्रश्न, अभिलाषा, एक आक्षेप जाने किस पर, ओढ़ने, गायक गूगाँ है, मन की शैय्या पर लेटी भावनाओं को, छूटे तटों की कचोटती स्मृतियाँ, परदेश में, आदर्श हमारा, धूसर दिन, आश्वासन, बिखरे से कुछ प्रश्न, संदर्भ आकाश की, शून्य में हाहाकार, बेमतलब, मन चिनक गया, एक प्रतीत, कुंठा, दुर्दिन में, रद्दी की टोकरी, व्यक्त होने की चाह में, घृणित सम्बन्ध, मनौतियों के पूरा होने तक, कथा मेरी, आग्रह, आलिगंनबद्ध होती मैं, अमूर्त सत्ता के कानों में, मधुर क्षणों की प्रतीक्षा में, हथेलियों पर चिबुक टिकाये, असाध्य तू मेरे लिए, विरोध अतिगात की, अनचाहे का वैधव्य, बहस लेखनी की, एक चिरन्तन सत्य, माँ बनी मैं, भय, पाती, कुछ उनकी सफाई में, कुछ अपने बारे में, रामायण के पृष्ठ पलटते हुए, आदेश अपने गीतों के गायन को संस्कृति के आस-पास, नव क्रान्ति का आह्वान तथा विरोध अतिगति की आदि संकलित है।

गलत पते की चिट्ठी :

प्रस्तुत काव्य संग्रह का प्रकाशन बिहार ग्रन्थ कुटीर से सन् 1978 में हुआ। इस काव्य-संग्रह में मन इधर उड़ा मन उधर उड़ा, मेरा घर : दस आयाम, दर्शन परिदर्शन युग का मुजरा, गलत पते की चिट्ठी, परिवर्तन, ज्ञापन, मध्यस्थ, कोयल नारेबाज, तूफान आ रहा है शायद, पीली साँझ, सीटियाँ बजाती दोपहर, चाँदनी लो अंतत : पारित हुई, मूल्यांकन, बूढ़ा दर्जी, सांस के बटोही, भाई सुदखन महतो के नाम, मृदंग बन बजी धरा, साइस चाँद, घुँघराला दिन, रेहताश ब्रह्मदण्ड, अलसाया पाखी, भूरी मिट्टी गीली मिट्टी, राम का अंगोछा, किसकी है बैशाखी चीड़, आँख में अंकुर जगे है, उत्तराधिकारी, किरणों के थन, घड़ी के नाम, नक्शेकदम के हर्फ, यादों की नात, कौन गुजरा है गली से, इन कविताओं को प्रस्तुत किया हैं।

अनामिका ने इस काव्य संग्रह की कविताएँ प्रारम्भिक दिनों में लिखीं थीं। जो कवयित्री के बाल जीवन में उपजती सहज ही दिखाई पड़ती है। उनके लेखन कार्य में चंचलता थी। अनामिका की चंचलता 'मन इधर उड़ा मन उधर उड़ा' नामक कविता में देखने को मिलती है। अनामिका ने इस कविता के माध्यम से बताया है कि मन एक

जगह नहीं रूकता। इसी तरह अनामिका ने 'मेरा घर : दस आयाम' कविता के माध्यम से घर के विभिन्न पहलूओं को इस कविता में दर्शाया है। प्रकृति के किसी भी भाग को अनामिका नकारती नहीं, बल्कि अपनी कविताओं का विषय बनाती है। मेघों के माध्यम से मन की चंचलता को दर्शाया है। इन कविताओं में बाल मनोविज्ञान का बेहतर परिचय देखने को मिलता है।

समय के शहर में

प्रस्तुत काव्य संग्रह का प्रकाशन 1994 में हुआ। यह काव्य संग्रह छः भागों में विभक्त है।

प्रथम भाग में 'बेजिल्द जिन्दगी' शीर्षक के अन्तर्गत- शीर्ष की टहनी, दादी की जम्पर, दद्दू की राम कहानी, जिन्दगी, जो फूल है कपास का, सूरज का खोंमचा, बेजिल्द जिन्दगी, हिमदीप, परदेश का एक और दिन, बीमार बच्चों का एकालाप, बाबूजी, पापा की आँखें, बुढ़उ बाबा का हुलास, पीपल इन कविताओं को प्रस्तुत किया गया है। सूरज का खोंमचा कविता के कुछ अंश देखें-

"रोज सुबह सूरज जब बादल का खोंमचा उठाकर
भर्रायी आवाज में गुनगुनाता-सा
गलियों में आता है'
मन की इस खोली के टूटे दरवाजे पर
मटमैली यादों की गाँती सी बाँध खड़े
विकलांग सपने
मिट्टी के गुल्लक में सिक्के सितारों के टोहते से
बड़ी-बड़ी पलकें झुकाकर
खुसर-फुसुर करते हैं बेमतलब!"[1]

द्वितीय भाग में दौंगरा शीर्षक कविता के अन्तर्गत दौंगरा, बेटे के लिए, माँ, आश्वासन, चिट्ठी, बेटी की चिट्ठी, यूरेका, निषिद्ध, नन्हें रामदहिन के चप्पल, सपनों की पीढ़ियाँ, बच्चा, सम्बन्ध शतक, माँ का बँटवारा, कैडाइलिस्कोप इन कविताओं को स्थान दिया गया हैं। जिनमें मानव जीवन की बांकी झाँकी देखने को मिलती है। सम्बन्ध शतक कविता के कुछ अंश देखें-

"होंठ उठाओ-

धनुष तुम्हारा ही है।

बाँहें ले लो-

बाग-बगीचे की पाइप सी ही बेचैन!

दबवाये हैं कभी पाँव भीगे मृणाल से?

आओ, मैं अब लगा आलता भेद मिटा दूँ,

जन्मों के

हे सखी-सखा।"[2]

तृतीय भाग में बातें शीर्षक कविता के अन्तर्गत शब्द फल्गु, बातें, दुर्घटना, संयोग, संधि-संघर्ष, रेत के अंकुर, मलबे के अंकुर, औकात, सिगरेट, नया वर्ष, देश: एक, देश: दो, भैरवी, शकुन्तला, खुशबू, तमाशा, रोशनी, वक्त बेचारा ठहरा ठहरा, कोहरे का शहर, ये पत्थर, कहीं सुर ही नहीं मिलता, देह टूटती है लोगों की, जमीन से फरार हूँ, कोई सोये साथ, दिन, सूराख, क्षमा, इन कविताओं को प्रस्तुत किया है। जमीन से फरार हूँ कविता के कुछ अंश देखें-

"क्या नहीं मिला मुझे कि कुछ नहीं मिला मुझे,

कि मौत आके मिल गले कि जाम भर पिला मुझे।

कि कमअसर कि मुख्तर ये जिन्दगी का जाम है,

कि रात जागती कटी, हुई सहर, सुला मुझे।

गिरी-उठी, उठी-गिरी, वे ठोकरें अजीब थीं,

कि बार-बार खींच भी नहीं सकीं रुला मुझे।

लपट उठी, झपट उठी कि प्रीति बन कपट उठी,

कि घर जला गयी मगर नहीं सकी जला मुझे।

ये सब हुआ मगर तभी कि पाँव जब रुके कभी,

वो दूर धूल में छिपा दिखा था काफिला मुझे।

तभी से बेकरार हूँ, जमीन से फरार हूँ,

इशारतन वो काफिला बुला रहा, बुला मुझे।"[3]

चतुर्थ भाग में 'गृहिणी की डायरी' शीर्षक कविता के अन्तर्गत देह-वंशी, दो शहरों की नौकरी-1, दो शहरों की नौकरी-2, लोढ़ी की चिट्ठी, एस.टी.डी.,यादें, इंतजार, मुक्तपाश, घर, साक्षात्कार, रात का घर, गृहिणी की डायरी, न्याय-मूर्ति, संधि-पत्र, टिकट, टर्मिनल, सुबह की चाँदनी, ऋण -शोधन, मेरे मन की नागासाकी, पुराने प्रेमी का संदेश, अपराध, प्रार्थना, गर्मी की साँझ, गीत, अवान्तर, आँखें, परेशानी, हँसी, होंठ, केश, बोली, घड़ी, चादर, आहटों की चिलमनों से इन कविताओं को स्थान दिया है। टिकट कविता के कुछ अंश देखें-

''तुम्हारी पसीजती तलहथी में

बस के बासी टिकट-सी बेकार

मैं कभी उँगलियों से लिपटती,

कभी भाग्यरेखों की धूल भरी सड़कों पर

पतझड़ की सूखी पत्तियों-सी उतरती

सरेआम गिरती हूँ यों ही कहीं।"[4]

इसी खण्ड में टर्मिनल शीर्षक कविता के अन्तर्गत अनामिका ने भावाभिव्यंजना के अनुपम उदाहरण देखने को मिलते है। यथा-

'तुम मेरी आत्मा के टर्मिनल की

पहली और आखिरी ही

बस थे पर

तुममें इतनी ज्यादा भीड़ थी-

भावों-तनावों की

कि पायदान से मेरे पाँव फिसल ही गये।"[5]

पंचम भाग में 'मौसम' शीर्षक कविता के अन्तर्गत बारिश: एक, बारिश: दो ऐसे झाँकी धूप, सन्नाटे, सुबह, दोपहर, शाम: एक, चिट्ठी, जेठ इन कविताओं को प्रस्तुत किया गया हैं। जेठ कविता के कुछ अंश देखें-

"बिल्कुल ब्रह्माण्ड पर

चुल्लू भर तेल-तेल सी चिप-चिप धूप थाप

बरगद की जटा या कि नानी की लट रूखी

उँगली से सुलझाये जाती है हवा

दूर वहाँ खिड़की के पार!

मनिहारिन-सी

मरकर पालथी

जेठ की दुपहरी

वह लगती है बाजार

रोल-गोल्य की पत्तियाँ-डालियाँ,

बिन्दियाँ, चूडियाँ फैन्सी

बेचती!"[6]

छठे भाग में 'दीवाली परदेस की' शीर्षक कविता के अन्तर्गत- नदी, दुछत्ती, बउआ की भूख, दीवाली परदेस की, चुप्पी, एक बैक, याद, बाढ़, गंध, औरतें, दुःख, ऋषिका इन कविताओं को स्थान दिया गया हैं। एक बैक कविता के कुछ अंश देखें-

"भुट्टे में हरी छाल के भीतर,

एक एक कर आता है दाना

दानों में एकबैक आता है

पंछियों का झुण्ड!

मन में, घर में, सारी दुनिया में

एक-एक कर आती है

चिन्ता, सन्तोष, उम्र की थकान!

एकबैक आता है विप्लव,

एकबैक आता है प्यार!।"[7]

'समय के शहर' अनामिका का पहला काव्य संग्रह हैं। जो बिना किसी दुराव-छिपाव के अब तक के पूरे काव्य-विकास का सच्चा और प्रामाणिक रूप प्रस्तुत करता है। अपने निजी वैशिष्टय और अपनी सम्पूर्णता में इस संग्रह की कविताएँ एक अलग तरह की रचनात्मक तृप्ति प्रदान करने वाली कविताएँ है। समय के शहर में की कविताओं में भाषा की यह विकासशीलता अनेक रूपों में देखी जा सकती है।

बीजाक्षर

प्रस्तुत काव्य संग्रह का प्रकाशन राज कमल प्रकाशन से 1995 में हुआ। इस काव्य संग्रह में समय, दाँत, भूल-चूक, साँप-सीढ़ी, उड़न खटोला, असबाब, एक

अनुपस्थित शहर, जिद, झूठ, स्त्री, कंकड़ियाँ, ऊब, अंत: सत्वा, लोरी की चिड़िया, जलेबा बुआ, इंतजार, प्रिय गोमती, अकेला आदमी, विस्थापन, जाड़ा, चुप्पी, नदी, सम्बन्ध, खौफ, एक अंदेशा-एक उम्मीद, घर, घण्टा-घर, चमत्कार नहीं, जिल्द, उड़ान, जादू का पेड़ मनवीर कौर, पानी, गन्ध, एक दिन, होना न होना, धीरज, चमक के अलावा, मंगल ग्रह की खिड़की से ऋषिका, ईश्वर, फैसला दरअसल सिमट आना है, कैलेण्डर, सब ठीक हो जायेगा, लोहा, हूँ न, दिन, अग्नि इन कविताओं को स्थान दिया गया है। ऋषिका कविता का उदाहरण यहाँ दृष्टव्य है-

''वह है भी और नहीं भी-

ऋषिका, अपनी नन्हीं सी बेटी!

है-जैसे होती है हवा

सुबह-सुबह

होंठों पर ओस के,

नहीं तो नहीं-जैसे होते नहीं आँसू

रोकर पूरी रीती आँखों में!

ठण्ड बहुत है-

जल्दी से बुन लेना है

नन्हा स्वेटर अब

मैं उल्टे फन्दे डालूँ तो तुम

सीधे फन्दे डालो साँसों के

गरम-गरम, ऊदे, मुलायम फर वाले!"[8]

अनामिका के इस काव्य संग्रह में स्त्री लेखन की जानी पहचानी रूढ़ियों के विरुद्ध अनामिका में अधिक दु:ख अधिक अन्तर्दाह झेलने का साहस भी है। उनमें

समस्त स्थितियों और चीजों के प्रति एक कौतुकपूर्ण खिलवाड़ जैसा रवैया भी है। 'ईश्वर" नामक कविता में अनामिका के भीतर का सच्चा दु:ख इस तरह प्रकट हुआ है कि उसमें समाज की यातना भरी गूँजें भी सुनी जा सकती है। देखें-

''ईश्वर

मेरी कुहनियों पर

घिसता है झाँवा पत्थर।

यह मेरा सातवाँ था,

ठीक-ठीक कहिए तो आठवाँ,

उसको जनकर थोड़ा पछताई भी थी मैं,

खून से लिथड़ा हुआ

यह मेरी जाँघों के बीच पड़ा था,

आँखे खुली नहीं थीं,

नाक कटी नहीं थी।"[9]

अनामिका की भाषा जाने-पहचाने ढंग से विचलन पैदा करने वाली युक्ति ही है। जो उनको एक अलग पहचान देती है।

अनुष्टुप

प्रस्तुत काव्य संग्रह का प्रकाशन किताब घर से 1998 में हुआ। यह काव्य संग्रह सात भागों में विभक्त हैं। संग्रह के प्रथम खण्ड 'बीच साया' शीर्षक के अन्तर्गत ईश्वर, परमगुरु, लुप्तोपमा, बीच का समय, ढूंढना, एक्सपायर्ड मेडिसिन, खोए पते, संयुक्त परिवार, छूटना इन कविताओं को स्थान दिया गया है।

द्वितीय खण्ड आधी 'दुनिया' शीर्षक के अन्तर्गत, प्रथम स्राव, विसंगति, कोहबर, हितोपदेश, पत्नी, कुटुम्ब, चौका, पीठ, औंकात, अनुवाद, दरवाजा, चिटठी लिखती हुई औरत, जुएँ, भिन्न, एक औरत का पहला राजकीय प्रयास, अयाचित,

रिश्ता, स्नान, आदि प्रश्न, सवेरा, सेफ्टी पिन, पहली पेंशन, दादी, पचास बरस, सार्वजनिक चौका, इन कविताओं को प्रस्तुत किया गया हैं। दरवाजा कविता के कुछ अंश देखें-

"और अन्त में सब पर चल जाती है झाडू
तारे बुहारती हुई
बुहारती हुई पहाड़, वृक्ष पत्थर
सृष्टि के सब टूटे-बिखरे करते जो
एक टोकरी में जमा करती जाती है
मन में, कही भीतर।"[10]

तृतीय खण्ड 'कूड़ा बीनते बच्चे' शीर्षक कविता के अन्तर्गत अंतः सत्वा, होमवर्क, ब्लाउज, भाग, लोड शेडिंग, कूड़ी बीनते बच्चे, ढोल, निस्संतान दम्पति का आपसी संलाप इन कविताओं को स्थान दिया गया हैं। ब्लाउज कविता के कुछ अंश देखें-

"मेरा ब्लाउज,
मेरे बच्चे का
गुल्लक है।"[11]

चतुर्थ खण्ड प्रागैतिहासिक शीर्षक कविता के अन्तर्गत इन्द्रियाँ, शाम, इच्छाएँ, विस्मृति, मुक्ति, इच्छा, प्रागैतिहासिक, माफी, टिकट-बूथ पर पब्लिक टेलीफोन, घाव, चुप्पी, हाशिया, हंसी इन कविताओं को प्रस्तुत किया गया है।

पंचम खण्ड परदेश का पहला जाड़ा शीर्षक कविता के अन्तर्गत तैयारी, बारिश और बेघर, खाली बटुआ, कठघरें में कविता का बयान, प्रौक्सी, बोरियत, चुटपुटिया बटन, गंध, सहयात्री, परदेश का पहला जाड़ा इन कविताओं को स्थान दिया गया है।

षष्ठम खण्ड 'बाज लोग' शीर्षक कविता के अन्तर्गत बाज लोग, साध्य, पटरी, दंगल विवरण इन कविताओं को प्रस्तुत किया गया है।

सप्तम खण्ड 'बहिनाबाई : इक्कीसवीं सदी' शीर्षक के अन्तर्गत बहिनाबाई कविता को प्रस्तुत किया गया है। यह कविता स्त्री के जीवन की यात्रा को प्रकाशित करती नजर आती है।

अनामिका की दृष्टि प्राय: वहाँ टिकती है जहाँ कोई टूट-फूट है। अनामिका अपनी कविताओं में संकेतों, रूपकों या लोक अभिप्रायों से काम लेती है। इस संग्रह की कविताएँ पाठकों के भीतर एक नई कलात्मक उत्सुकता जगाती है और साथ ही स्त्री लेखन के प्रति एक गहरी सोच प्रदान करती है।

कविता में औरत

प्रस्तुत काव्य संग्रह का प्रकाशन इतिहास बोध से 2002 में हुआ। इस संग्रह में 24 (चौबीस) कविताएँ संग्रहीत है।

इस काव्य संग्रह में-

मुहल्ले की आयरन बालाओं के गम, मौसम बदलने की आहट, तीसरी दुनिया : एक स्त्री का अंतर्जगत बनाम बहिर्जगत, बूंद-बूंद रिसती महिलाएँ : एक वर्ग पहेली, आखरी हिचकी, एक परित्यक्ता की मौत, पार्क में बुढ़ापा, एक अंतर्कथा, जनाना बीमारी, टच बुड, सार्वजनिक चौका, कुहनियाँ, अथ श्री सत्यनारायण कथा, केरल के एक लोकधुन पर आधारित, नेकी कर और दरिया में डाल, रेखा दी और उनका एल. आई.सी, एजेण्ट, द्‌वितीय (पक्ष एक), क्या मैं अन्दर आ सकती हूँ (द्‌वितीय पक्ष दो) छोटा सा यह नुक्कड़-नाटक, अस्पताल गेट के समोसे, सिनेमाघर, अभ्यागत, घूँघट के पट खोल रे, चौदह बरस की दो सेक्स वर्कर्स, गालियाँ सुन लेने की शील इन कविताओं को प्रस्तुत किया गया है। केरल के एक लोकधुन पर आधारित कविता के कुछ अंश देखें-

"आरारी अरारिआरोउ•••.......

देखा जी एक तमाशा

बाबी में फूल खिले-अमरतिया, लहरीले।

हुर-हुद, झिरझिर अस्फुट,

जंगल की 'टीवी टुट' बन

मेरे पीछे चली।"[12]

स्त्री आंदोलन पितृसत्तात्मक समाज में पल रहे स्त्री संबंधी पूर्वाग्रहों से पुरुषों की क्रमिक मुक्ति असम्भव नहीं मानता। दोषी पुरुष नहीं है, वह पितृसत्तात्मक व्यवस्था है, जो जन्म लेकर मृत्यु तक पुरुषों को लगातार एक ही पाठ पढ़ाती है कि स्त्रियाँ उनसे ही हैं। उनके भोग का साधन मात्र है।

गालियाँ सुन लेने का शील नामक कविता उन भोली हंसमुख गृहिणियों को संबोधित करती है, जो दिन भर घर का पूरा काम करती हैं। पति के बाहर से लौटने पर पत्नी शाम से सुबह तक गालियाँ ही सुनती रहती है। समाज में स्त्री के प्रति, उनके शरीर के प्रति जो रुख है, उसे मिटाना जरूरी बन गया है। स्त्री मुक्ति सिर्फ साहित्य में ही नहीं सम्पूर्ण जीवन समाज के लिए जरूरी हो गयी है। इसके लिए पथ का निर्माण कविता कर रही है।

खुरदरी हथेलियाँ

प्रस्तुत काव्य संग्रह का प्रकाशन राजकमल प्रकाशन से 1998 में हुआ। यह काव्य संग्रह छः भाग में विभक्त है। प्रथम खण्ड 'अन्त:पुरम्' शीर्षक के अन्तर्गत स्त्रियाँ, बेजगह, काजल, फर्नीचर, अन्त्याक्षरी, मौसियाँ, छप्पर की मालाएँ, एक औरत का पहला राजकीय प्रवास, पतिव्रता, ऊनी टोपी, सूली ऊपर सेज पिया की, यक्ष-प्रश्न, चादर, महिला कलाकार, गृहलक्ष्मी, चीख, स्त्री-काल, टूटी-बिखरी और पिटी हुई, वृद्धाएँ धरती का नमक है इन कविताओं को स्थान दिया गया है। छप्पर की मालाएँ कविता के अंश देखें-

"चिमनियाँ, छप्पन और बोरसियाँ

इक्कट-टुक्कट खेलने आती है

दादी के सपनों में।

धुआँ कहीं जाता नहीं,

उमड़-घुमड़ रह जाता है घर में

बिस्तर के नीचे,

रिश्तों के बीच।

सूखे हुए फूल, ठोगें प्रसाद के,

मालाएँ और ऐसी सारी चीजें जिन पर

झाड़ू लगाना

माना जाता था निषिद्ध

ऐसे निशाने से वे उछाल दी

जाती थीं।"[13]

द्वितीय खण्ड 'दुधकट्टू' शीर्षक कविता के अन्तर्गत सत्रह बरस की प्रतियोगी परीक्षार्थी, एक पगलेट कथा, गणतन्त्र दिवस, घरेलू नौकर, हाथ का पलास्टर, चकमक पत्थर, पापा, जलेबियाँ, ब्रह्ममहूर्त में, ईटों की लॉरी, खिदमत इन कविताओं को प्रस्तुत किया गया है। एक पगलेट कथा की कविता के कुछ अंश बड़े मार्मिक है। यथा-

"उधर लैम्प-पोस्ट के नीचे

एक अखबार बिछाकर

अपनी सैकेंड हैंड सीबीएसई की किताबों से

धड़ाधड़ निकालता सवाल

बैठा है एक धनुर्धर!

घूमती हुई मछली की एक पुतली है-

बस छूना ही चाहता है शर

कि बोल पड़ती है मछली'

रुक जाओ, लगातार यो घूमते-घूमते

मुझे आ रही है कुछ मितली-सी।"[14]

तृतीय खण्ड 'अटपटी प्रेम कविताएँ' शीर्षक कविता के अन्तर्गत एक अजब-सा वियोग, बस-टिकट, जानना, जिहवा, डाक-टिकट, बसेरा, धुनिया, हरियाली है एक पत्ती का खो जाना, उसने कहा था और पुनश्च शीर्षक कविताएँ संकलित है। धुनिया कविता के कुछ अंश देखें-

''छोड़ी हुई देह-सी

बिल्कुल निस्पन्द-तुड़ी-मुड़ी-

उस पर भी प्यार आ रहा है-

ऐसे बजाओ धुनकिया का इकतारा-

नाचने लगे खोल,

नाचने लगे सेमल,

नाचने लगे मेरे सेमल का बीया!

टूटने लगे घुँघरू रग-रग में हम सबके-

धरती की लय में धीमे-धीमे नाचते-

और फैलते

अम्बर की रुई की लय में-

रेशा-रेशा।"[15]

चतुर्थ खण्ड 'आजादी' शीर्षक कविता के अन्तर्गत हंसी, वनमेथी और महाश्वेता दी, पूछताछ कार्यालय, दीवार की अस्फुट आकृतियाँ, आजादी, अंग्रेजी यूँ भेजती है बमवर्षक विमान, पाब्लो नेरूदा के नाम इन कविताओं को स्थान दिया गया है। आजादी कविता के कुछ अंश देखें-

"बेटिकर संचारी को

तीन महीने कैद बामशक्कत

या जुर्माना सौ रुपैया!

एक गरीब आदमी की

आजादी की कीमत

बस सौ रुपैया!

आजादी-आजादी-आजादी

बेटिकटी आजादी बस सौ रुपैया!

एक गरीब आदमी भी

पहने तो राजा लगे-

सैकेंड हैंड आजादी-बस सौ रुपैया।"[16]

पंचम खण्ड 'मुसलमान क्या होता है अम्मा' शीर्षक कविता के अन्तर्गत बम, दंगे और कर्मकाण्ड, बेचारे पापा और सूक्तियाँ, पत्ता-पत्ता बूटा-बूटा, खाँसी इन कविताओं की प्रस्तुत किया है। पत्ता पत्ता बूटा बूटा कविता में माँ-पुत्री का संवाद देखें-

"माँ, प्रेमचन्द की कहानी में

वे जो एक हामिद था-

दादी के चिमटेवाला

यह जो इतनी मारामारी हुई है-

कहाँ गई होगीं उसकी दादी?

कहाँ गया होगा उसका चिमटा?

क्या हामिद बड़ा हो गया होगा-

इतना बड़ा, खूब-खूब बड़ा?

मुझसे लम्बा या मेरे जितना?

क्या वह दादी को बचा लेगा,"[17]

षष्टम खण्ड 'तोस-भरोस' शीर्षक कविता के अन्तर्गत पत्नी, मोतियाबिन्द, कैदियों के जूतें, छिटकी हुई ईंटें, भरोसा, भाई-चारा, दुविधा, घुमन्तू टेलीफोन, कैलेंडर, लघु पत्रिकाएँ, बुखार, अनपढ़, खुदरी हथेलियाँ, मिथिला पेंटिग, परमगुरु, धोखा, पुराने दोस्त, दलाईलामा, दलित महासंघ की बैठक से लौटते हुए, बेरोजगार, अनुपस्थित, भूख, फालतू, देश, जिनके लिए लिखी जाती हैं कविताएँ, किनके लिए लिखी जाती है कविताएँ इन कविताओं को स्थान दिया गया है। भूख कविता के कुछ अंश देखें-

"गौतम के सूखे ओठों की पपड़ियों से

धूल-सी झड़ी थी मैं

एक कटोरी खीर में!

आम्रपाली मेरे गाँव की थी,

मेरे ही गाँव का एक बीजू वृक्ष था वह

जिसके नीचे नन्ही-सी टोकरी में

वह पड़ी मिली थी।"[18]

इस संकलन में अनामिका की कविताएँ एक व्यापक अर्थ में गहरे वात्सल्य की अभिव्यक्ति हैं। उन्होंने समाज की क्लिष्ट विडम्बनाओं को देखा एवं समझा है।

अनामिका ने पितृसत्तात्मक समाज के साँचों को समझा है कि किस प्रकार लड़कियों को खास तरह के सांचों में ढाला जाता है। वह आजीवन उन साँचों में गलती, ढलती रहती हैं, कभी इन्कार नहीं करती। उनके काव्य में जीवन का वह रूप मिलता है, जो स्त्री की मुक्ति, उसकी अपनी पीड़ा, उसके सपने, इच्छाओं और आकांक्षाओं को अभिव्यक्त करते हैं।

दूबधान

प्रस्तुत काव्य संग्रह का प्रकाशन भारतीय ज्ञानपीठ से 2007 में हुआ। यह काव्य संग्रह पाँच भागों में विभाजित है।

प्रथम खण्ड 'जोगिनिया कोठी' शीर्षक के अन्तर्गत आम्रपाली, तुलसी का झोला, भामती की बेटियाँ, राधा की बेटियाँ, मरने की फुर्सत, इन कविताओं को प्रस्तुत किया है।

द्वितीय खण्ड 'पेड़ हरे स्तन है माँ के' शीर्षक कविता के अन्तर्गत पूरे चाँद की रात, चन्द्रखिलौना, गई रात का प्लैटफॉर्म, गनीमत, उड़ान, धनकटनी, दोपहर, डाकिया, शाम, जाड़ा चुप्पी, नदी इन कविताओं को स्थान दिया गया है।

तृतीय खण्ड 'गृहलक्ष्मी' शीर्षक कविता के अन्तर्गत लेडीज संगीत, खंडिता, स्नान, अभ्यागत, चमक के अलावा, सेफ्टी पिन, विमानपत्तनम्, एक नन्ही सी धोबिन, सार्वजनिक चौका, सद्गृहस्थ, यौन दासी, जुएँ, चौदह बरस की दो सेक्स वर्कस, बसरा की राबिया फकीर, जलेबा बुआ, गालियाँ सुन लेने का शील, बीसवीं सदी, चिटठी लिखती हुई औरत, गृहलक्ष्मी पर ग्यारह कविताएँ, भिन्न, चोटें वृद्धाएँ, प्रत्यभिज्ञा, गाँव तकिए और मूसल, चकलाघर की एक दुपहरिया, भरम, पॉलीथीन, रिश्ता इन कविताओं को प्रस्तुत किया हैं। गालियाँ सुन लेने का शील कविता के कुछ अंश देखें-

''वैसे तो रहती है शाश्वत डायटिंग पर स्त्रियाँ

पर गालियाँ खाने में उनका नहीं है जवाब।

गोलगप्पों की तरह गपागप

गाल फुलाकर, सिर झुकाकर,

घोंटकर हुई थूक

इमली का छलकाती

खाये ही जाती हैं

शाम से सुबह तक

खूब मिर्चीदार गालियाँ।"[19]

चतुर्थ खण्ड बाल- मिक्खु शीर्षक कविता के अन्तर्गत ब्लाउज, होमवर्क, बउआ की भूख, बच्चा, बीजगणित, कूड़ा बीनते बच्चे, मृत्युगन्ध पर फेनाइल, आलि, आयी बसन्त ऋतु की बहार, अजन्ता गुफा में एक बाल भिक्षु, देश-प्रेम, ऋषिका, अक्षर-ज्ञान, हम-बिस्तर इन कविताओं को प्रस्तुत किया गया हैं। देश प्रेम कविता में उन्होंने अपने देश प्रेम को उजागर किया है। उसके कुछ अंश यहाँ दृष्टव्य है-

"छब्बीस जनवरी की थी वो ठंडी सुबह।

तकिए के नीचे

छूट गया था ट्राँजिस्टर खुला!

सुबह-सुबह बजने लगा राष्ट्रगान!

एक पल को सोचा मटिया दूँ,

लेकिन फिर क्या जाने क्या हो गया

कम्बल-वम्बल फेंककर मैं खड़ी हो गयी

सावधान!

अजब चीज हैं प्रेम भी,

मुँह की लगी छूटती ही नहीं।"[20]

पंचम खण्ड मायानगरी शीर्षक कविता के अन्तर्गत मायानगरी का प्रथम वर्ष, गठरी, चर्चा ट्रांस्लेशन, पुस्तकालय विमर्श, टोटके, बाहर का आदमी, वैज्ञानिक कारण, डिविडेंड, रियाज, मसहरी, अस्तबल, घूरा, दीवाली: वर्किंग विमेन्स हॉस्टल, लम्बी छुट्टी पर है ईश्वर, जूते, कुंडी, भात बेरहटिया का, टूटी घड़ी में समय, बस टिकट दरवाजा, चुट-पुटिया बटन, आदि कविताओं को स्थान दिया हैं।

दूब-धान अनामिका की कविताओं का नया संग्रह है। इन कविताओं में एक आधुनिक भारतीय स्त्री अपने भीतर की खिड़की से बहकर आता संगीत सुनती है। मोहक विलम्बित स्वरों में बजता हुआ यह संगीत बेताबियों के तिलस्म की तरह पाठक तक सम्प्रेषित होता है। उनका स्वर नयी सहस्राब्दी का स्वर है, जिसकी स्थिर हलचलों में बुलबुलाते कोमल सवाल अपनी समस्त फितरतों के साथ स्थापित विमर्शों को अस्थिर करते चले जाते है।

टोकरी में दिगन्त, थेरी गाथा

अनामिका का 'टोकरी में दिगन्त' थेरी गाथा : 2015 में प्रकाशित हुआ है। इस संग्रह में 109 (एक सौ नौ) कविताएँ है। यह संकलन तीन भागों में विभाजित है। इस संग्रह की कविताएँ इतिहास कालीन छोटे-छोटे दृश्यों में स्त्री जीवन से सम्बन्धित तथागत के वर्तमान संवाद को व्यक्त करती है। 'पुरोवाक्' में आम्रपाली, कूड़े में पन्नियाँ, थर्मामीटर तथा किमोथेरेपी के बाद' कविताओं में इतिहास के झरोखे से वर्तमान परिवेश की बात कही गई हैं।

प्रथम खण्ड 'थेरियों की बस्ती' में 31 (इकतीस) कविताओं में महान साधिकाओं के गुणादर्श को व्यक्त किया गया है। उनमें इतिहास, गठरियाँ, तृष्णा थेरी, फिर बोली वह स्मृति, चली आई स्मृति, थेरी फिर बोली, चिन्दियाँ : क्षत विक्षत कश्मीर की, सरहद से लल्लदे बोल पड़ी, वितृष्णा थेरी अब बोल पड़ी, मेरे ही भीतर से, शान्ता थेरी बोली, सरला थेरी ने कहा, मुक्ता थेरी बोली, मृतकों के जूते : जिजीविषा थेरी बोली, मृत्युगन्ध पर फेनाईल, जिजीविषा थेरी फिर बोली, घसियारिन

थेरी से बोली बूढ़ी घोड़ी, अर्थ वही जो इन शब्दों में समा जाएँ, दुख भी खुशी ही है, भन्ते केतकी थेरिन, मरती नहीं है उड़ानें, उत्पल वर्णा थेरीगाथा, मिल्लका थेरी, अभिरूपा थेरी, अजन्ता की गुफाएँ, गाथा कुछ अन्य थेरियों की, बोली सुमंगल माता, सुजाता थेरी, तिलोत्तमा थेरी, चम्पा थेरी आदि का उल्लेख है।

द्वितीय खण्ड 'ये मुजफ्फरपुर नगरी है, सखियों' में रॉग नम्बर, वापसी जच्चाघर की मोनकिया धाय उर्फ घोड़वाली थेरिन : जन्नत के बाद, बेखबरी, लम्बी बीमारी के बाद की तन्द्रा, तिवारी की माँ, हरिसभा चौक : जन्म का पड़ाव, ट्रंककाल, कचकारा, साइकिल, भूमंडल, गणिका गली, जड़ी-बूटियाँ, नायिका भेद : नवेलिका थेरी बोली लंगट सिंह कॉलेज के आचार्य से, अन्ना केरिनिना : चैपमैन बहूउद्देशीय, कन्या विद्यालय के पुस्तकालय में, चल पुस्तकालय, नारायण महतो का रिक्शा-रथ, मंडी की आचार-संहिता, शहीद चौक का अशोक, स्तम्भ सभा भवन की दरी : मंहत दर्शनदास, महिला महाविद्यालय, बेला रोड़, कथक : सेंट फ्रांसिस जेवियर्स का चौराहा, डर-अपडर ही धर्म का घर है, एक पुराना सहपाठी बोल पड़ा, रस्सियाँ : आम गोला चौक, टूटी हुई छतरी, सार्वजनिक हत्या : भगवान बाजार, बूँढे गृहस्थ और मशीनें, अनुत्तरित प्रेम : रिक्शे पर गुल्ली से फेंका गया पहला प्रेम पत्र, चौक चक्कर की वो फुर्सत बुआ, उमा दी : मेरी सिलाई शिक्षिका, द्वार छेंकाई : पुराना कोहबर, प्रोफेसर पद्मप्रिय थेरी,एम.एल.सी, शिखा सक्सेना, प्रथम वर्ष, एम.आई.टी : वितृष्णा के शरबत की रेसिपी, चोर, भेड़िया, एक पुराना सहपाठी, दाता राजेन्द्रशाह के मजार पर उनका नन्हा नवासा, वृद्ध दम्पत्ति का प्रेमालाप : मिठनपुरा, मुजफ्फरपुर, प्रसूति-गृह में पिता : एक पुराने छात्र के लिए जो अब नया पिता है, सत्रह बरस का प्रतियोगी परीक्षार्थी : माँ, यह दुख क्यों होता है, इतिहास : क्रान्ति चौक इस्माइल खाँ एडं संस, मिठनपुर : 1 भीगी बरसाती आदि कविताएँ संकलित हैं।

तृतीय खण्ड के अन्तर्गत खिचड़ी, स्त्री कवियों की जहालतें, पगड़ी, ध से धमाका, मेट्रों, गृहलक्ष्मी, परचून, लोकतंत्र, एक पिता की मुश्किलें, स्वाधीनता-सेनानी, नशेड़ी, बन्दीगृह, नमस्कार, दो हजार चौंसठ, पूर्ण ग्रहण, मानिनी, प्रेम, प्रेम इंटरनेट पर, पुरुष, महानगर में अम्मा, खेद-पत्र, करुणा थेरी ने कहा, नमक, सुपारी, आधार

कार्ड, नसीहत, थेरी गाथा : तृष्णा नदी, महाभीषण, दुख की प्रजातियाँ, वापसी, हवामहल, आदि कविताएँ संकलित है।

अनामिका चुनी हुई कविताएं-

इस संकलन में-स्त्रियाँ, बेजगह, फर्नीचर, मौसियाँ, छप्पर की मालाएँ, एक औरत का पहला राजकीय प्रवास, पतिव्रता, सूली ऊपर सेज पिया की, वृद्धाएँ धरती का नमक हैं, सत्रह बरस का प्रतियोगी परीक्षार्थी, चकमक पत्थर, एक अजब-सा वियोग, बस-टिकट, जानना, जिह्वा, डाक-टिकट, बसेरा, हरियाली है एक पत्ती का खो जाना, अँगरेजी यों भेजती है बमवर्षक विमान, बम, पत्ता-पत्ता, बूटा-बूटा, कैदियों के जूते, घुमंतू टेलीफोन, बुखार, अनपढ़, खुरदुरी हथेलियाँ, धोखा, दलाईलामा, बेरोजगार, अनुपस्थित, भूख, मोहल्ले की आयरन-बालाओं के गम, कुहनियाँ, केरल की एक लोकधुन पर आधारित, द्वितीया, अभ्यागत, घूँघट के पट खोल रे, गालियाँ सुन लेने का शील, तुलसी का झोला, मरने की फुर्सत, नदी, सद्गृहस्थ, चोटें, वृद्धाएँ, बच्चा, बीज गणित, जूतें, आम्रपाली, पूरे चाँद की रात, चंद्रखिलौना, गनीमत, उड़ान, धनकटनी, लेडीज संगीत, सेफ्टी पिन, सार्वजनिक चौका, चिट्ठी लिखती हुई औरत, भिन्न, प्रत्यभिज्ञा, चकलाघर की एक दुपहरिया, ब्लाउज, कूड़ा बीनते बच्चे, मृत्युगंध पर फेनाइल, ऋषिका, जुएँ, अक्षर-ज्ञान, रियाज, जाड़ा, मसहरी, अस्तबल, चुप्पी, स्नान, चमक के अलावा, दरवाजा, चुटपुटिया बटन, होमवर्क, अनुवाद, बीच का समय कविताएँ संकलित है।

अनामिका अपनी कविताओं के बारे में कहती है कि- “अपनी कविताओं में मैं उन चरित्रों के घरौंदे बनाती! उनके ही तट पर, उनकी ही बालू और अपने शब्दों से- शब्द, जो मुझे जहाँ-तहाँ से उधार मिल जाते-घर की चर्चाओं से, लोककथाओं-लोगगीतों से, मिथकीय कथाओं से, गली से, मोहल्ले से, खेल के मैदान से, किसी बतकही से।"[21] धनकटनी कविता के कुछ अंश देखें-

“धान के बिछुड़ने के भय से

खेत का पानी भी

दुर्बल हुआ जा रहा है!

देखा, कैसे सर झुकाए खड़ी हैं,

धान की पकी बालियाँ"[22]

कहानी संग्रह प्रतिनायक-

कहानी अभिवक्ता के मन की कल्प भाष्य होती है। जिसमें भूतकाल की परिवेशनीयता से भविष्य की स्थिति का मूल्यांकन सहज बन उपजता है। अनामिका ने 'गृहस्थी' कहानी में पुरुष मेधा परिवार की निष्ठुरता की ओर संकेत किया है। चूल्हा चक्की करने, बच्चे पैदा करने उन्हें पाल-पोस कर बड़ा करने, अपने पति और उनके परिवारवालों की सेवा करने, सुबह से शाम तक रसोई-घर में काम करने लिए मात्र उसका उपयोग किया जाता था। इस तरह वह घर के चार दीवारी में बन्द हो जाती है। शादी के बाद लड़कियों की जिन्दगी बिल्कुल बदल जाती है। उसे अपने पति की मर्जी के मुताबिक जीवन जीना पड़ता है। कहानी की नायिका की भी ऐसी ही हालत है।

शादी से पहले लड़कियों को यह सीख दी जाती है कि वह अपने ससुराल में सब कुछ सहकर चुप रहे। कहानी में अपनी माँ द्वारा नायिका को यह सीख दी जाती है कि- ''लड़कियों का दबा, सकुचा रहना ही शोभता है, बेटी? कोई हरकत जो सबकी आँखों में तुम्हें गड़ा दे, कभी अच्छी नहीं होती तो जोर से हँसना, बोलना भी अपराध हुआ करता है लड़कियों के लिये।"[23] यानी कि शादी के बाद लड़कियों की स्वतंत्रता समाप्त हो जाती है। उनका जोर से हंसना और बोलना तक अपराध हो जाता है। उस पर रोक लगायी जाती है। वास्तव में स्त्रियों पर इस प्रकार से रोक लगाने के पीछे पुरुष प्रधान समाज ही है, लेखिका इसी ओर इशारा करती है।

'गृहस्थी' कहानी में पति, पत्नी और बेटी सानु है। पति-पत्नी के बीच छोटी-छोटी बातों पर अनबन होती है। घर में पति की हुकूमत चलती रहती है। एक दिन उसका पति किसी गाड़ी के नीचे आ जाता है। पत्नी दिन रात मेहनत करने उसकी

सेवा करती है। इलाज के लिए पैसे खत्म हो जाने पर उसकी माँ अपने गहने बेच देती है। इतना कुछ अपने पति के लिए करने पर भी पति की सोच बहुत घटिया है। वह सोचता है- "इन दिनों सहसा इतनी चपल क्यों हो चली है? इधर मैं अपंग पड़ा हूँ और यह फुर्ती में रहती है- मुझे चिढ़ाने को, डॉक्टर को प्रभावित करने के लिए या फिर नैहर के गुमान में।'[24] दाम्पत्य जीवन की असफलता के पीछे पति-पत्नी के अहं की टकराहट और आर्थिक स्थितियाँ है तो कहीं आपसी अविश्वास और संदेह है। पति-पत्नी के दाम्पत्य सुख को शक नष्ट कर देता है। कुछ दिनों बाद उसका पति काम पर जाने लगता है पर उसका जीवन सहज नहीं होता। पति ऑफिस के कामों में उलझता रहता है, पत्नी पर ज्यादा ध्यान नहीं देता। घर में पुरुष अपने को घर का मालिक और पत्नी को नौकरानी समझता है। इस तरह का व्यवहार रखने पर दाम्पत्य कभी सन्तुष्ट नहीं बन सकता।

इस संग्रह की अन्य कहानियों में- इमारत की पायदारी, हुनर-दर-हुनर, प्रतिशोध, एक थे भगवान, समिधा, रिश्तेदार, चाँद छड़ी और मिस्टर हाँग, तबादला, द वीड्स रेजिस्ट, छिपकली, आदि कहानियाँ है। इन कहानियों में मनुष्य जीवन की दृश्यानुभूत परिवेश को स्पष्ट करती नजर आती है।

उपन्यास-

1. पर कौन सुनेगा- 1983 में प्रकाशित उपन्यास पर कौन सुनेगा अनामिका का पहला उपन्यास है। इस उपन्यास की कथावस्तु जाति प्रथा से उठने वाली समस्याओं को व्यक्त करती है।

2. मन कृष्ण-मन-अर्जुन - 1984 में प्रकाशित उपन्यास मन कृष्ण-मन-अर्जुन अनामिका का दूसरा उपन्यास है। यह उपन्यास पत्राचार शैली में लिखा गया आधुनिक उपन्यास है, जिसमें मनोवैज्ञानिक जीवन विमर्श को उद्घाटित किया गया है।

3. अवान्तर कथा- 2000 में प्रकाशित उपन्यास है। अवान्तर कथा उपन्यास को अनामिका ने चार भागों में विभाजित किया है। यह उपन्यास स्त्री जीवन की अविराम त्रासदी को व्यक्त करता है।

4. दस द्वारे का पिंजरा- 2008 में प्रकाशित उपन्यास दस द्वारे का पिंजरा उपन्यास को अनामिका ने दो भागों में विभाजित किया है। अपने प्रथम खण्ड में वेश्या जीवन की संस्कार युक्त भावना को व्यक्त करती है। दूसरे खण्ड में स्त्री मुक्ति को सुनहरे उत्सव सा रूप में स्पष्ट करता है। यह उपन्यास पंडिता रमाबाई की महत्वपूर्ण जिन्दगी के अनछुए पहलूओं को अनावृत करता है। इसके साथ उनकी शिष्या ढेलाबाई है और उसकी शिष्याएँ है। इस प्रकार एक श्रृंखला के रूप में स्त्रियाँ परस्पर सहयोग एवं एकता के साथ सेवा मार्ग पर चलती हुई दिखाई देती है। दलित, शोषित, अनाथ, विधवा स्त्रियाँ भारतीय नवजागरण को उत्तेजित करने में बहुत मदद देती थी। लेखिका कहती है कि- ‘‘कोई सोए साथ भले ही जागते सभी अकेले है।"[25] दुनिया में नि:स्वार्थ भाव से सेवा के लिए डॉ. स्पंदन के सम्बन्ध में यह टिप्पणी उल्लेखनीय है- ‘‘लोगों को पता चले कि नि:स्वार्थ सेवा और प्रेम दुनिया की कितनी बड़ी नेमत है, दुनिया की सबसे बड़ी क्रान्ति।"[26]

5. तिनका तिनके पास- 2008 में प्रकाशित उपन्यास की मूल कथा जीवन के अन्तर्मन की व्यथा को स्पष्ट करती है। उपन्यास में तारा की माँ एक सेक्स-वर्कर है। वह अपना जिस्म बेचकर बेटी को पढ़ाती है ताकि वह पढ़-लिखकर आगे बढ़ पाये, जिन्दगी में कुछ बन पाये- ‘‘मरने के पहले माँ कह गयी थी- बेटा, किसी तरह पढ़ लेना। उसका बस चलता तो मुझे पहले ही दिन से होस्टल में रखकर पढ़ाती।"[27] तारा की माँ चाहती थी कि तारा पढ़े, कुछ बने। उसकी अपनी जिन्दगी बर्बाद हो गयी है। उसकी बेटी पढ़ लिख अच्छी अफसर बन जाये तो अपनी बेटी की जिंदगी तो बच जाएगी। उपन्यास में एक जगह गृहस्थिन की विवशता के बारे में तारा अपनी बेटी से कहती है- ‘‘बेटी, एक

तरह की कॉल-गर्ल हर औरत होती है- ब्याहता, गृहस्थिन। भी-कॉल गर्ल को तो यह छूट भी होती होगी कि हर कॉल पर वह प्रस्तुत न हो, पर गृहस्थिन की क्या मजाल। अजब होता है वह दृश्य जब पिटी हुई पत्नी को समझा-बुझाकर या पकड़-धकड़कर माँ या सासें वापस पति-परमेश्वर के कमरे भेजती है कि पति को बिना माफी माँगे ही माफ करें, काम से थका-हारा चिड़चिड़ा प्राणी है- 'मर्द बच्चा' औरत की छाँह चाहिए उसको -'दिल से तो बुरा नहीं बेचारा' क्या बीतती है पत्नी के मन पर .... और कभी किसी क्षण अपनी तरंग पर पति परमेश्वर के गाल पर हाथ रख दिया तो ऐसी विकट झाड़ सुननी पड़ती है कि पूछो मत। अपना सा मुँह लेकर रह जाने की पीड़ा अभी तुमने नहीं झेली होगी, तारा, क्योंकि अभी तुम ब्याहता नहीं हो।"[28] यानि कि वैवाहिक जीवन में स्त्री को कई प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है। उनमें से एक है अपनी न इच्छा होने पर भी पत्नी को पति का मन बहलाना पड़ता है। इस प्रकार स्त्री के शारीरिक शोषण को व्यक्त किया है।

6. बिल्लू शेक्सपियर : पोस्ट बस्तर- 2014 में प्रकाशित बिल्लू शेक्यपियर : पोस्ट बस्तर' तीन खण्डों में है। यह उपन्यास सामाजिक विसंगति, आर्य भाषा और मानव जीवन व्यवहार को व्यक्त करता है।

अनामिका का अन्य साहित्य-

स्त्री विमर्श :

स्त्री विमर्श से सम्बन्धित अब तक उनकी चार पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी है जिसमें नारी समाज के अन्तर्द्वन्द्वों, प्रश्नों, चिन्ताओं, आकुलताओं की आहटें सहज भाव से दर्ज है।

स्त्रीत्व का मानचित्र :

अनामिका ने समय-समय पर स्त्री विमर्श पर प्रकाशित लेखों का संग्रह है। यह पुस्तक जो 1995 में सारांश प्रकाशन से प्रकाशित हुई है। पुस्तक में पाँच परिशिष्टीय

लेख तथा स्त्री विमर्श सम्बन्धी 8 लेख संकलित है। अनामिका जी ने प्रस्तावना में कहा है कि- "भिन्न भिन्न श्रेणी, वर्ग, जाति, नस्ल की होते हुए भी जेंडर के धरातल पर सारी दुनिया में स्त्री का संघर्ष एक सा है क्योंकि उसकी लड़ाई हर जगह पितृसत्तात्मक व्यवस्था से है। स्त्रियों की भावनात्मक, मनोवैज्ञानिक, नैतिक, भाषिक और अस्मिता सम्बन्धी समस्याएँ प्राय: एक सी है।"[29] पुस्तक के विषय में समीक्षक माधव भारद्वाज का कहना है, कि- "अनामिका का नारी चेतना के विस्तार की दिशा में एक बड़ा प्रयास है स्त्रीत्व का मानचित्र। फेमिनिज्म की भूत और भविष्य में समझने का प्रयास। दर्शन से आरम्भिक यात्रा शुरू कर वर्तमान पर आने का प्रयास करती यह पुस्तक एक बेहतरीन कोशिश तो मानी जा सकती है।"[30]

प्रथम अध्याय में स्त्री-

आन्दोलन सदर्भित कुछ बातों का यहाँ उल्लेख कर रहा हूँ। जैसे स्त्री-आन्दोलन प्रतिशोध जनित नहीं है। स्त्री आन्दोलन की समर्थक स्त्रियाँ पुरुष नहीं बनना चाहती। स्त्री और पुरुष की लड़ाई का व्याकरण सामन्तों और आसामियों, पूँजीपतियों और मजदूरों, औपनिवेशिक ताकतों और शोषितों के बीच की लड़ाई के व्याकरण से अलग हैं। स्त्री और पुरुष के बीच की यह लड़ाई दो वर्गों, दो नस्लों, दो जातियों, दो दलों, दो राष्ट्रों के बीच की लड़ाईयों से तुलनीय नहीं। स्त्री आन्दोलन पितृसतात्मक समय में पल रहे स्त्री सम्बन्धी पूर्वाग्रहों से पुरुषों की क्रमिक मुक्ति को असम्भव नहीं मानता। दोषी पुरुष नहीं, वह पितृसतात्मक व्यवस्था है जो जन्म से लेकर मृत्यु तक पुरुषों को लगातार एक ही पाठ पढ़ाती हैं कि स्त्रियाँ उनसे हीनतर हैं, उनके भोग का साधन मात्र। स्त्री आन्दोलन धनी महिलाओं का कोरा वाग्विलास और न्यूज में उनके बने रहने की साजिश नहीं हैं।"[31]

दूसरे अध्याय में विषय से सम्बन्धित कुछ पश्चिमी दार्शनिक प्लेटो, अरस्तू, डेकार्टस, कांट, हीगेल, मार्क्स, जॉन स्टुअर्ट मिल की बातों पर विचार किया गया हैं।

तीसरा अध्याय भारतीय सन्दर्भ में स्त्री को देखनें-परखने की एक कोशिश है। स्त्री और उसके अस्तित्व से सम्बद्ध श्लोकों को वेदों से उद्धृत कर व्याख्या सहित प्रस्तुत किया गया हैं। यथा-

अहमेव बातइव प्रवाम्यरभमाणा भुवननि विश्वापरो
परो दिवापर एना पृथिव्यतावनी महिना सं बभूव।"[32]

विज्ञ! मैं जो कहती हूँ, वह पूर्ण यथार्थ है, मुझे न मानने वाले क्षीणता को प्राप्त होते हैं, मैं देवताओं और मनुष्यों के परम पुरुषार्थ की उपदेशिका हूँ, मेरी कृपा से ही लोग बलवान, मेधावी, श्रोता और कवि बनते हैं।

चौथा अध्याय नारीवादी आन्दोलनों/नारी मुक्ति आन्दोलनों की अलग-अलग धाराओं को प्रस्तुत करता है। यही लिबरल, रेडिकल, मनोविश्लेषणात्मक, आदि स्त्रीवादी चिन्तन की मुख्य धाराओं का परिचय दिया गया है। विभिन्न विद्वानों की मान्यताओं को प्रस्तुत कर इन आन्दोलनों का स्पष्ट चित्र भी परिलक्षित होता है।

पाँचवे अध्याय में अनामिका कुछ महत्वपूर्ण अवधारणाएँ व्यक्त करते हुए फेमिनिज्म की तीन मूल प्रवृत्तियाँ बताती है।

1- जेंडर के सामाजिक कन्स्ट्रक्ट है।

2- पितृसतात्मक व्यवस्था में आचार सहिताएँ चूँकि पुरुषों के प्रति पक्षपातपूर्ण थी इसलिए स्त्रियों को विकास के समान अवसर भी कृपापूर्वक ही दिये जाते है।

3- भविष्य का जो लिंग शोषण मुक्त समाज होगा, उसे गढ़ने से स्त्रियों के कार्यक्षेत्र प्रेम, प्रजननादि विशेष अनुभवमूलक वृत्तान्त और उनकी भाषा तथा शिल्प स्वतन्त्र व्यक्तित्व का विकास बहुत निर्णायक सिद्ध होगें।"[33]

षष्टम अध्याय भारत के स्त्री केन्द्रित आन्दोलन : उपलब्धियों और सीमाएँ नामक शीर्षक में भारत में शुरू से हो रहे आन्दोलनों के विषय में बताया गया है। जैसे दहेज विरोधी आन्दोलन, बलात्कार के खिलाफ संघर्ष आदि।

सातवाँ अध्याय विशेष रूप से भारतीय साहित्य पर आधारित है। जिसका शीर्षक है- भारतीय साहित्य : अन्त:सलिला का महोच्चार। अनामिका का मानना है कि- भारतीय साहित्य के सन्दर्भ में दो तरह के दृष्टिकोण दिखायी पड़ते हैं।

1- पहला सलमान रूश्दी का, जिनका मानना है कि भारतीय भाषाओं में वर्तमान में जो भी रचनाएँ लिखी जा रही हैं, उनकी तुलना अगर अंग्रेजी में लिखे गये भारतीय साहित्य से करेंगे तो हम पायेंगे कि भारतीय भाषाओं के साहित्य से अधिक भारतीय अंग्रेजी साहित्य प्रभावी हैं।

2- दूसरा दृष्टिकोण कैस्टेल, गायत्री स्पीवाक, होमी जहांगीर भाभा आदि विद्वानों का है, जो अनुवाद की समस्याओं से जुड़ा है। कई उदाहरणों तथा सन्दर्भों के सहारे अनामिका ने इस अध्याय में कई साहित्य सम्बन्धी बातों की पुष्टि की है।

पुस्तक के अन्त में समय-समय पर विभिन्न पत्रिकाओं में प्रकाशित स्त्री विमर्श से सम्बद्ध अनामिका के लेख परिशिष्ट में संकलित हैं, जो इस प्रकार है- समन्वित नारीवाद और भारतीय देवियाँ, स्त्रीत्व और भाषा, स्त्री कथाकारों की स्त्रियाँ, तीसरी दुनिया : एक स्त्री का अन्तर्जगत बनाम बहिर्जगत, मुक्त करती हूँ तुम्हें मेरे भीषण भय। कुछ समसामयिक प्रकाशन है- स्त्री सापेक्ष छिटपुट टिप्पणियाँ, संक्रमणशील भारतीय समाज और स्त्री उत्तरवाद और साहित्याध्ययन की चुनौतियाँ आदि। अनामिका ने एक स्थान पर कहा है कि- "पुरुष समाज में यह अवधारणा बहुत दिनों तक प्रचलित रही कि स्त्रियों में स्वतंत्र यौन तन्त्रिकाएँ नहीं होती। इसलिए वे प्रणयक्रिया में निष्क्रिय साथी एवं एक कोख मात्र होती है। जीव वैज्ञानिक अनुसंधानों, समाजशास्त्रीय सर्वेक्षणों और स्त्रियों के अन्तरंग आत्मप्रकाशन वक्तव्यों ने इसे गलत साबित किया है।"[34] स्त्री की निष्क्रियता का कारण मानसिक एकात्म के बिना पुरुष का देह पर हावी हो जाना भी है। वे आगे कहती है कि- "बौद्धिक तादात्म्य के बिना एक दूसरे के दुख-सुख से एकाकार हुए बिना, एक दूसरे के लिए गहनतम सम्मान

जागे बिना सीधे दैहिक स्पर्श पर उतर आना दुनिया का क्रुरतम खेल है जो पुरुष वर्षों से खेलते आए है।"[35]

निस्सन्देह 'स्त्रीत्व का मानचित्र' स्त्री विमर्श के क्षेत्र में व्याप्त गलत धारणाओं के विरुद्ध अनामिका का कठोर प्रहार है। समीक्षक मिलिन्द माधव भारद्वाज कहते है- अनामिका के लिए फेमिनिज्म एक सार्वदेशिक घटना है और वे देशी घटनाओं को उसी मुख्य धारा में आत्मसात कर देखना चाहती हैं।"[36] स्त्री विमर्श के क्षेत्र में अनामिका के कथन कहीं न कहीं अपना महत्व रखते है। वह एक स्थान पर कहती है कि- "उत्तर वैदिक युग व महाकाव्य युग तक आते-आते पुत्र की कामना अत्यन्त बलवती होने लगी। कन्यादान को गोदान से तुलनीय समझने वाले समाज में कन्या का जन्म (सुरक्षा की जिम्मेदारियाँ, विवाह के बाद कन्या का दूसरे घर चले जाने के कारण अर्थव्यवस्था, धन और पिंडदान में पुत्र की आवश्यकता के कारण) घर में गाय आने से कम प्रसन्नता का कारण होता था।"[37] अनामिका की यह पुस्तक स्त्रीत्व का सही मानचित्र बनाने में सफल है तथा स्त्री आन्दोलन की विभिन्न भ्रांतियों को दूर करती हुई स्वस्थ सम्भावनाओं की प्रतिष्ठा करने में सहायक सिद्ध हुई हैं। स्त्री-विमर्श पर मानक कार्य की सबसे पहली पुस्तक का श्रेय इसी पुस्तक को जाता है। रेखा कस्तावर का मानना है कि- "यह पुस्तक स्त्रीवादी आन्दोलन को पौराणिक, ऐतिहासिक, सामाजिक और दार्शनिक परिप्रेक्ष्य में देखने-परखने का गम्भीर प्रयत्न करती है। परम्परागत नारी छवि को पुख्ता करने वाली रचनाओं से भिन्न यह समय से संवाद करती पुस्तक है। स्त्रीवादी आन्दोलन की राजनीतिक यात्राओं से प्रारम्भ होकर पश्चिमी दार्शनिक निकायों, भारतीय आर्यग्रन्थ, लोक साहित्य, स्त्रीत्ववादी चिन्तन एवं आलोचनाओं की धाराओं पर विचार करते हुए अनामिका स्त्रीत्व और भाषा, स्त्री कथाकारों की स्त्रियाँ, तीसरी दुनिया की स्त्रियाँ, संक्रमण काल में भारतीय स्त्री, उत्तरवाद और साहित्याध्ययन की चुनौतियों के माध्यम से स्त्री प्रश्नों पर अनेक कोणों से विचार करती है। इस पुस्तक में महत्वपूर्ण यह भी है कि स्त्री केन्द्रित विश्व साहित्य की अंग्रेजी में सूची तथा पश्चिमी दार्शनिक निकायों पर परिशिष्ट संलग्न है, जो महत्वपूर्ण दस्तावेज है।"[38]

मन माँझने की जरूरत :

स्त्री विमर्श पर आधारित अनामिका की यह दूसरी पुस्तक है। मन माँझने की जरूरत सन् 2004 में सामयिक प्रकाशन से प्रकाशित है। पुस्तक के प्रथम कवर पृष्ठ पर लिखे शब्दों से ही पुस्तक का संक्षिप्त परिचय मिल जाता है। कवर पर लिखा है- "अनामिका की यह पुस्तक मिथकीय आख्यानों की सुप्रतिष्ठित नारियों की अनूठी व्याख्या ही प्रस्तुत नहीं करती बल्कि पुरातन मध्ययुगीन अधुनातन स्त्री के विविध सन्दर्भो की विलक्षण छानबीन करती हुई नारी विमर्श का एक नया ही सोपान चढ़ती है-पाश्चात्य एवं प्राच्य साहित्य सन्दर्भो के बीच पितृसतात्मक समाज के लिए मन माँझने की जरूरत का बड़ी शिद्दत से अहसास भी कराती है।"[39] 33 लेखों का यह संग्रह अपने शीर्षक से ही पाठकों का ध्यान आकर्षित करता है। पाठक के अन्तर्मन को जगाने के साथ-साथ उसे उत्साहित करने का कार्य भी ऐसे शीर्षक करते है। घर में परिवार में रहकर एक स्त्री किस प्रकार मानसिक और शारीरिक उत्पीड़न को सहती आ रही है। इस पीड़ा का उल्लेख पुस्तक के प्रथम पृष्ठ पर ही दृष्टिगत होता है- "बहुधा उन्हें कोप भवन में घुटता हुआ अनादृत छोड़ दिया जाता है और अगर वे काम छोड़ हड़ताल करती है या बिस्तर पर अपना प्रतिरोध दर्ज करती है तो लात, जूतों, गाली-तौली से उन्हें उनकी औकात बताकर कहा जाता है- जा तू घर से निकल, भाग।"[40]

इस संग्रह के द्वारा अनामिका स्त्री के दुख-दर्द के कारणों को ढूँढ़ निकालने की कोशिश करती है तथा अपनी काव्य भाषा के सहारे प्रचलित मिथकीय आख्यानों को नये सिरे से पारिभाषित करती चलती हैं। प्रासंगिक उदाहरणों द्वारा अपनी बात की पुष्टि करते हुए अनामिका कहती है- दो बातें अक्सर ही औरतों के मुँह से सुनने में आती है- मर्द तो बच्चा ही होते है उन्हें माफ न करें तो क्या बराबरी से निबटें? जवाब देने में जरा तेज हुई औरत तो कहती है-कुत्ता हम पर भौंके तो हम कुत्ते पर थोड़े ही भौंकेंगे। हम मर्दो के स्तर पर उतरकर लड़ ही नहीं सकती। यही सोचकर नहीं छोड़ती घर कि बाहर की दुनिया ही कौन सा स्वर्ग हैं। दस कुत्तों के बीच रहने से अच्छा है, एक ही कुत्ते के साथ बसर कर लेना।"[41]

इधर से उधर टहलता हुआ कोई पुरुष दिखे और एक सोलह साल की लड़की उससे मोहविष्ट हो जाये तो समझा-बुझाकर उसे घर भेजने के स्थान पर सीधे उसके नाक-कान काट लेना कहाँ का न्याय है? लक्ष्मण दरअसल पुरुष प्रधान समाज के उस बेबुनियाद तर्क का संवहन करते दिखते है कि- स्त्री की अपनी यौन संवेदनाएँ तो होती ही नहीं और वह निर्लज्ज बनकर अपनी ओर से प्रणय निवेदन करती है तो दाल में कुछ काला जरुर होता है।"[42]

इस पुस्तक के माध्यम से अनामिका समकालीन स्त्री-विमर्श जगत की कई जटिल समस्याओं का समाधान ढूँढ निकालने का प्रयास करती नजर आती है। पुस्तक के विषय में समीक्षक रजनी गुप्त के कहा है कि- ‘‘समकालीन दौर में साझा जीवन जीती, पुरानी नयी-पीढ़ी के स्वप्न, संघर्ष और वेदनाओं के मर्म को छूते हुए वे जाने अनजाने विश्व भगिनीवाद के मनोसामाजिक यथार्थ का ग्राफ तैयार करने लगती है। गौरतलब है कि उनके इस विमर्श में अपने समय के बड़े-बड़े सवालों से टकराती आधी दुनिया की हकीकत को सामने लाया गया है जहाँ लिंग, जाति, धर्म, क्षेत्रीयता और अस्मिता के द्वन्द्व में फंसी स्त्री की व्यूह रचना, उसके आधे अधूरे सपने और जद्दोजहद के जटिल ब्योरों की छान-बीन की गयी है। उनके अनुसार स्त्री चाहे किसी भी वर्ग, वर्ण, नस्ल या धर्म की हो, लेकिन उसकी तकलीफ, शारीरिक-मानसिक हिंसा एवं बेघर होने का और उससे उपजा खौफ।"[43] घरेलू हिंसा पर चर्चा करते हुए आगे वह बताती है कि घर हमेशा सुरक्षा की दृष्टि से बनाया जाता है, लेकिन आजकल असुरक्षा का मुख्य स्थान बन गया है हमारा घर। अनामिका कहती है- चैरिटी बिगिन्स एट होम पर वायलेंस बिगिन्स एट होम भी अतिशयोक्ति नहीं है। देवी सरस्वती इनसेस्ट का आदिकालिक उदाहरण है।"[44] स्त्री पर वर्तमान समाज में हो रहे अन्यायों को पाठकों के सामने प्रस्तुत करती है यह पुस्तक। संग्रह के संगृहीत लेखों में कहीं आक्रोश नहीं है, बल्कि बात को कहने और कहकर समझाने का एक वक्र अन्दाज हर कहीं दिखायी पड़ता है। स्त्री-विमर्श से जुड़ी अनेक बातों को समेटती है यह पुस्तक।

पानी जो पत्थर पीता है :

अनामिका की यह तीसरी पुस्तक है जो 2005 में प्रकाशित हुई। स्त्री-विमर्श पर आधारित 'पानी जो पत्थर पीता है' चार खंडों में विभाजित है।

पुस्तक के प्रथम पृष्ठ पर ही स्त्री की प्रतिष्ठा की गयी है। आज के युग में स्त्रियाँ पुरुषों की तुलना में अधिक लेखन कार्य कर रही है। वह भी बेरोक-टोक। अनामिका के शब्दों में- ''पहले जब स्त्रियाँ कलम उठाती थी, उनमें वह होता था 'पूअर लिजा कॉम्लेक्स' 'बेचारी दुख की मारी' वाला भाव। आधुनिक स्त्री लेखन आत्मविश्लेषणपरक है और उसके मैं का विस्तार इतना बढ़ गया है कि सारी दुनिया समा गयी है उसमें। जब भी स्त्रियाँ कलम उठाती है, खुद से अकेले में रू-ब-रू होकर पूछती तो है- प्रेम गली की तरह मेरी अस्मिता कही इतनी तो सँकरी नहीं हुई जाती 'जामै दुई न समाहिं।''[45]

लेखिका मानती है कि औरत की देह उसके शोषण का सर्वप्रथम साइट रही है। अनामिका स्त्रीवाद को भाषणधर्मिता के खिलाफ संवादधर्मिता का आन्दोलन मानती है। दरअसल स्त्रियाँ घर में जिस प्रकार समस्याओं का समाधान मिल बाँटकर ढूँढ लेती है, उसका ही विस्तृत रूप है स्त्री-विमर्श है। इस पुस्तक के माध्यम से लेखिका ने कुछ आवश्यक बातों को हमारे समक्ष रखा है। वह कहती है, वर्ग, वर्ण और नस्ल भी पितृसतात्मक कन्स्ट्रक्ट ही है, औरतों के बनाये हुए नहीं है। शिक्षा-दीक्षा से विरत कुछ स्त्रियों विशेष परिस्थितियों में पितृसतात्मकता का एजेंट जरूर बन जाती है, पर धनी-गरीब, ऊँच-नीच, काला-गौरा आदि का फर्क मिटाकर ही एक स्त्री दूसरे के गले मिलती है। यही है यूनिवर्सल सिस्टरहुड। मातृदृष्टि न्याय सम्बंधित तो होती ही है। इस दृष्टि से विचार किया जाये तो स्त्री मुक्ति में सबकी मुक्ति है। जैसे एक स्त्री को शिक्षित करना पूरे परिवार को शिक्षित करना है, वैसे ही स्त्री मुक्ति सबकी मुक्ति है।''[46]

दूसरा खंड है- पश्चिम की और जननाट्य।

''आह मैं मुक्त हुई

अच्छी विमुख हुई

तीन टेढ़ी चीजों से

ओखली से, मूसल से

अपने कुबड़े पति से

भले ही विमुक्त हुई।"[47]

लेखिका ने इस खंण्ड में पश्चिमी स्त्रियों के मुक्ति सम्बन्धी विचारों को प्रस्तुत किया है। खंड के आरम्भ में वह कहती है- ‘‘लड़-वड़ के थक गये है लोग। इन्तजार कर करके थक गयी हैं औरतें। कर लेने दो थोड़ा भोग-वोग। ये ही कुछ तर्क चला करते होगें ‘चॉसर की वाइफ ऑफ बाथ' के भी मन में तभी तो उसने मजे-मजे में पाँच शादियाँ कर लीं-बारह बरस की उम्र में पहली की थी ओर पचास के पास पहुँचकर भी छठे पति का उसका सन्धान जारी है।"[48]

तीसरा साहित्य खंड में लेखिका कहती है कि स्पेस और अवसर कभी मिलते नहीं, ले लिए जाते है, चाहे वह स्त्री हो या पुरुष। अस्मिता आन्दोलन का मूल सिद्धान्त यही है। इसके अतिरिक्त वैधव्य को लेखिका एक बड़ी दुर्घटना मानती है। अंग्रेजी लेखिका सिल्विया प्लाथ के शब्दों के माध्यम से अनामिका विधवाओं की जिन्दगी पर दुख व्यक्त करती हैं-

‘‘कमजोर धुआँ और मृत्यु है वह साड़ी

जो वह लपेटे रखती है अपने चारों तरफ।

सितारों के ऊपर कड़े शून्य में

फाख्ते-सी फड़फड़ाती होगी आत्माएँ-

इस सोच में लेकर दाने तलहथियों पर

देह अकेली, एक पाँव पर खड़ी है। "[49]

अधिकांश स्थितियों में विधवाएँ किसी न किसी पुरुष द्‌वारा दी गयी पीड़ा को बिना किसी प्रतिरोध के सहती है, क्योंकि वे उनकी जिन्दगी को आगे बढ़ाने में

मददगार साबित होते है। उन विधवाओं के पास न रोने, बोलने की शक्ति है और न ही कुछ करने की। बस, ये मन ही मन सोचती है- जो होना है, हो जाये, जो घटना है, घट जाये।

तत्पश्चात समकालीन साहित्य पर आधारित कविता का अन्त नहीं, सम्बन्धों के नये निष्कर्ष आदि अध्याय है। पुस्तक में अरविन्द जैन के विश्लेषण कर्म पर भी लेखिका ने विचार प्रस्तुत किया है। वह यह भी मानती है कि पुरुष की जगह जब स्त्री बदमाशी करती है तो स्थितियाँ बदल जाती है।

चौथे खंड 'कुछ आप बीती कुछ जग बीती' में अनामिका ने कुछ ऐसे पात्रों, घटनाओं से हमारा परिचय करवाया है, जो हमारे दैनिक जीवन में किसी न किसी मोड़ पर मिल जाते है। सरकारी अस्पतालों के वातावरण पर आधारित एक अध्याय जीवन पर मृत्यु का पहरा में अनामिका कहती है- स्त्रीशक्ति के मनोरम उत्सव है सरकारी अस्पतालों के महिला वार्ड। हर तरह की प्रतिकूलताओं के बीच भी संघ शक्ति हँसना सिखा देती है।"[50] अस्पताल स्त्रियों के लिए एक ऐसा स्थान हैं, जहाँ वे जिन्दगी के तीखे अनुभवों से थोड़ा अवकाश पाकर अन्य औरतों के साथ हँसती हुई बतियाती है- घर गृहस्थी के झमेले, टंटे, मारपीट, ताने-तराने, नोच-खसोट से कुछ दिन की यह मुक्ति उन्हें कुल मिलाकर वरदान ही लग रही थी। एक दूसरे से अपने सुख-दुख, स्मृतियाँ और सपने बाँटती वे रह रहकर हँस देती थी।"[51]

वृद्धजन की समाज के लिए उपयोगिता और समाज का उनके प्रति उपेक्षित व्यवहार-इस पर भी अनामिका ने अपने विचार प्रकट किये है। इन्सान को वह कोल्हू का बैल मानती है। बुजुर्ग बॉस और गॉड फादरों द्वारा ऑफिसों, कॉरपरेट सेक्टरों और अन्य कई बड़े संस्थानों में महिलाओं पर हो रहे यौन शोषण को वह घृणास्पद मानती है। वर्तमान युग में पति-पत्नी सम्बन्धों में घटित अपराधों पर वह कहती है- "ज्यादातर घरेलू टंटों के मूल में या तो पैसा होता है या फिर दाम्पत्य सुख का अभाव। घर में भावहीन यान्त्रिक सम्भोग, नोच खचोट, मारपीट, झेलती-झेलती औरतें कई बार किसी अन्य पुरुष के आकर्षण पाश में बँध जाती है, और उसके बाद

वैकल्पिक जीवन गाथा की तलाश में होती है पति हत्या। मोहब्बत और जंग में सब जायज है। जीवन तो एक बार ही मिलता है, एक बार ही मिलता है आदमी का चोला- यह मौका क्या गँवाना, यही सब सोचा जाता होगा। कई बार क्रूर पति, क्रूर पिता भी होते है- और माँ की मुक्ति में ही बच्चों को अपनी मुक्ति दिखती हैं।"[52]

अपने आस-पास का परिवेश, वातावरण, लोग किस प्रकार एक स्त्री की सोच को विकसित और प्रभावित करते है, इसका भी जिक्र अनामिका अपनी पुस्तक में करती है। घरेलू औरतें बाहरी दुनिया के बारे में क्या सोचती है, यह तो इसी से प्रकट हो जाता है, जब वे कहती है- हजार भेड़ियों के बीच रहने से तो अच्छा एक भेड़िये के साथ जिन्दगी काटना है। देह से जुड़े हर प्रश्न पर स्त्री शंकित रहती है। औरतें अपने लिए कुछ न रखकर सब कुछ घर को ही समर्पित कर देती है, फिर भी कुछ स्थानों पर उनके समर्पण की निन्दा ही होती है। उनको उनका सम्मान और आदर नहीं मिलता जो उन्हें मिलना चाहिए था।

स्त्री-विमर्श का लोकपक्ष :

स्त्री विमर्श के सन्दर्भ में अनामिका की चौथी पुस्तक स्त्री विमर्श का लोकपक्ष वाणी प्रकाशन से सन् 2012 में प्रकाशित हुई है। यह पुस्तक उस पुरुष युवा पीढ़ी को सम्बोधित है, जहाँ परिवर्तन की प्रक्रिया सम्भव है। जो पुरानी लीक से हटकर स्त्री को अपने समकक्ष खड़ा मानती है। लेखिका मानती है कि स्त्री को गुलाम बनाये रखने की मानसिकता सिर्फ पुरुषों में नहीं, स्त्रियाँ भी इसमें अपनी भागीदारी निभाती है-बतौर रवीन्द्रनाथ टैगोर, खट्टा अचार और सख्त पति स्त्रियाँ पसन्द करती हैं।"[53] पुरुषों के मुकाबले तीन गुना अधिक काम करने के बाद भी दुनिया भर की सम्पत्ति का मात्र 2.2 प्रतिशत हिस्सा स्त्रियों के नाम है, यानी प्राय: सभी सर्वहारा है। विडम्बना यह है कि उस कमाई पर भी उनका हक नहीं। वह मानती है कि पुरुष वर्ग के अन्दर कहीं न कहीं एक तालिबानी छुपा बैठा है, जो वर्ग, वर्ण, नस्ल और लिगंगत वैविध्य को शोषण का आधार बनाकर भेदभाव की राजनीति खेलता है और स्त्रियों को अपने से कमतर या हीनतर मानता है।"[54] सामाजिक ढाँचे के साथ-साथ धर्म और आध्यात्मिक

मूल्य भी स्त्रियों के विरोध में जाकर शोषण का हथियार बन जाते हैं। जैसे सहिष्णुता, धीरज, ममता, क्षमा, उदारता, सेवा-उत्कृष्ट मानव मूल्यों (हिन्दी में प्राय: सब मूल्य स्त्रीलिंग ही है) का निवेश सिर्फ स्त्रियों में ही हो यह कहाँ तक न्यायसंगत हैं?

अनामिका के शब्दों में, दुनिया का इकलौता पूर्णत: अहिंसक आन्दोलन है स्त्रीत्ववाद :

एक मनोवैज्ञानिक लड़ाई, जिसने मुकाम भी हासिल किया है तो बहनापे के जोर से और युद्ध, दंगे, नि:शस्त्रीकरण, रंगभेद की नीति, पर्यावरण और विश्वायन-सभी बृहत्तर प्रश्नों पर अपने उन भाइयों, बेटों और दोस्तों के साथ लगातार जूझ रही है, जो उनकी तरह की सर्वहारा और आदि- विस्थापित हाशिए के लोग हैं।"[55] उन्हें विश्वास है कि ये ही हाशिए के लोग एक दिन स्त्री काया, स्त्री मन और स्त्री दृष्टि की तालिबानी समझ को दूर करने में हमारी मदद करेंगे, क्योंकि प्रतिकार का और सत्याग्रह का नैतिक तेज कहीं बचा है तो इनमें ही। स्त्री का शरीर ही उसके शोषण का मुख्य आधार रहा है। सर्वेक्षण के अनुसार दस लाख में से केवल एक सम्बन्ध ही ऐसा होता है, जहाँ स्त्री पहल करती है, यही प्रमाणित करता है कि स्त्रियों के विवाहेतर सम्बन्धों का कारण उनके दाम्पत्य जीवन का कड़वा अनुभव होता है। लेखिका के अनुसार बराबरी का यह साथ तभी सम्भव होगा, जब पुरुष अतिपुरुष न हो और स्त्रियाँ अतिस्त्री। सुख का मूलाधार दोनों का सन्तुलन ही है। पुस्तक के प्रारम्भ में 'ऑनर किलिंग' नामक लेख में अनामिका प्रेम के नाम पर होने वाली इन हत्याओं की खिलाफत करते हुए युवा पीढ़ी के प्रति आशान्वित नजर आती है कि हमारा यह युवा समाज प्रेम से, धीरज से और परिपक्व, सुस्मित दृढ़ता से इन नृशंस हिरण्यक पशुओं का जवाब देगा-रूढ़ियों की होलिका पूरी तरह धू-धू जलकर रहेगी।

प्रथम अध्याय स्त्री विमर्श किस चिड़िया का नाम है में स्त्रीवाद में अपनी भूमिका के बारे में बताते हुए अनामिका अपने मातृत्व के अनुभवों का जिक्र करते हुए कहती है कि- "निजी से निजी अनुभूतियाँ सिर्फ निजी नहीं रहती। जब उनका राजनीतिक सन्दर्भ हो जाता है, वे औरों की चेतना के विकास का कारक हो जाती

है।"[56] तथ्यों और आँकड़ों को साक्ष्य रख अनामिका ने निजी और सार्वजनिक क्षेत्र में श्रमिक वर्ग और वंचित श्रेणी की स्त्रियों पर कार्यक्षेत्र में होने वाले काम के आवंटन और सरकारी ऋणों के आवंटन में होने वाले अन्याय को उद्घाटित किया है। आधुनिक विमर्शों पर लगे अभियोगों का खंडन कर अनामिका अस्मिता आन्दोलन और स्त्री विमर्श को अलगाववादी नहीं मानती, क्योंकि, "स्त्री समाज एक ऐसा समाज है, जो वर्ग, नस्ल, राष्ट्र आदि संकुचित सीमाओं के पार जाता है और जहाँ कहीं दमन है- चाहे जिस वर्ग, जिस नस्ल, जिस आयु, जिस जाति की स्त्री त्रस्त है- उनको अंकवार लेता है।"[57] दलित शक्तियों के प्रति वे अपना कर्तव्य निभाते हुए कहती है कि- "कम से कम स्त्री विमर्श पर अलगाववाद का ठप्पा नहीं लगाया जा सकता।"[58]

विचार विमर्श को व्याख्यायित करते हुए अनामिका कहती है- "विचार अन्दर खदकते है, विमर्श बाहर होता है- विमर्श यानी सलाह-मशविरा, सार्वजनिक स्पेस में उस नये विचार का प्रवेश जो अब तक भीतर-भीतर उमड़ा।"[59] लेखिका इसे स्वाभिमान मिशन का नाम देते हुए कहती है कि विमर्श मार-काट नहीं मचाते, प्रजातन्त्र के अच्छे नागरिकों की तरह मानवाधिकार के मुद्दे उठाते है, तार्किक ढंग से उठाते है। अनामिका स्त्री-विमर्श के तीन पक्ष प्रस्तुत करती हैं-

1. "स्त्रीलेंस से देश दुनिया की और स्वयं स्त्री के देह मन की नयी समझ का विकास।

2. विकास के नये मॉडलों की तलाश, जहाँ कोई किसी पर हावी न हो, न प्रकृति का दोहन हो, न मनुष्य का, विकास के अवसर सबको बराबर मिले और

3. करूणाकंवलित न्याय दृष्टि का पल्लवन हर तरफ से यानी कि युद्ध, दंगा, घरेलू और बाहरी आतंकधर्मिता, बहुविध हिंसा और असन्तुलन धीरे-धीरे जन जीवन से और वैयक्तिक जीवन से तिरोहित हो जायें।"[60]

देह को शोषण का मूलाधार मानते हुए वह कहती है- दुनिया में कहीं कोई परिवर्तन लायेगा तो विचार ही, विचार-विमर्श, स्त्री-विमर्श जो अस्मिता की गुत्थियों को भाषा में परिवर्तित देखता है और चाहता है प्रक्षालन करना (छानना) धर्म ग्रन्थों

का, कानून का, दृष्टि का, आचार का.....। स्त्री-विमर्श सार्वभौम बहनापे की बात करता है। गाँधी जी ने कहा था, बल का अर्थ यदि पशु बल है, तब तो स्त्रियाँ पुरुषों से कमतर है, पर यदि उसका अर्थ बुद्धि बल और नैतिक बल है तो वे उनसे बीस ही है, उन्नीस नहीं। अनामिका इस कथन से विनम्र असहमति जताते हुए कहती है कि बुद्धि बल, नैतिक बल ही नहीं, दैहिक बल में भी स्त्रियाँ पुरुषों से बीस ही है। प्रसव पीड़ा, बच्चों को पालने की प्रक्रिया, घर और बाहर दोनों जिम्मेदारियों को एक साथ निभाने का संयम इसका एक उदाहरण हैं। फिर भी स्त्रियाँ पुरुषों का विरोध नहीं करतीं, वे केवल सही प्रशिक्षण चाहती है पुरुषों का और स्त्री विमर्श इसी प्रशिक्षण का निवेदित शास्त्र है, जो पितृसत्ता से उकताये पूर्वाग्रहों से मुक्ति चाहता है- उनकी और पूरे समाज की।"[61] स्त्रीवाद को लेकर एक विवाद यह भी है कि अलग-अलग जाति, वर्ण, वर्ग, नस्ल की स्त्रियों की समस्याएँ और दुख जब अलग-अलग है तो उनका समाधान एक जैसा कैसे होगा? लेकिन यह भी सत्य है कि मानसिक बुनावट, देह और दैहिक उत्पीड़न के अनगिनत बिन्दुओं पर विश्व स्तर की स्त्रियाँ एक ही है।

स्त्री की भाषा है प्रत्येक भाषा की संपत्ति। स्त्री भाषा का बिंब और शब्द चयन, प्रवाह, टोन और डिक्शन सब अलग है। वह कहती है कि- "स्त्री भाषा देवदार की पेटी से जैसे पुराने बर्तन, पुराने मुकदमें के कागज, अजब-गजब लोकोक्तियाँ, लोरियाँ और लोकगीत। भाषा की दीवार पर हाथों की हरियाली थपकन से सपनों और जातीय स्मृतियों का अतिवात लिखती हैं स्त्रियों की भाषा। स्त्रियाँ न हों तो भाषा की जातीय अनुगूँजे ही गायब हो जाएँ। अकारण नहीं है कि नानी-दादी, घर या मोहल्ले की वृद्धाओं की संगति में पलने वाले बच्चों की भाषा में एक अलग अनुगूँज होती है। भाषा के साथ 'मात्' का प्रयोग उसे एक अलग तरह की ताकत देता है- माँ के दूध की ताकत बतरस की लहक! आँचल का दूध, आँखों का पानी और बतरस-तीनों मिल-जुलकर भाषा का दशमूलारिष्ट और ग्राइपवाटर पिला देते है। नवजातक की तरह अपनी जंघा पर उलट-पलट कर भाषा की तेल मालिश करती है, स्त्रियाँ अनौपचारिक सी उमंग और संवादधर्मिता डेमाक्रेट के गुण है। कन्धे पर हाथ रखकर घरेलू बिम्बों में सहज ढंग से कोई डेमोक्रेट ही बतिया सकता है। इससे यह सहज प्रमाणित होता है

कि स्त्री दृष्टि एक प्रजातांत्रिक दृष्टि है और आज प्रजातांत्रिक दृष्टि और प्रजातंत्र की जरूरत स्वयं सिद्ध है।"[62]

दूसरे अध्याय में कामकाजी मुसलमान और दलित स्त्रियों की स्थिति जैसी समस्याओं से परिचय कराना ही लेखिका का उद्देश्य हैं। साथ ही हिन्दू समाज में विधवाओं की स्थिति तथा वृद्धजनों की सामाजिक उपयोगिता पर भी ध्यान आकृष्ट करने का प्रयास हैं। कुल मिलाकर अनामिका यह कहना चाहती है कि स्त्री-विमर्श का ध्येय यही है, जो साहित्य का- 'मन की जलवायु बदलना'। स्त्री विषयक जितने भी कानून पास हुए है, उनके असफलतापूर्वक क्रियान्वयन, उनसे जुड़ी विडम्बनाओं तथा न्यायप्रक्रिया की लचरता पर व्यंग्य किया गया है इस अध्याय में। दहेज, बलात्कार, यौन हिंसा, भ्रूण हत्या, बेटियों का उत्तराधिकार, घरेलू हिंसा बिल, सहजीवन, विधायिका में आरक्षण और यौनकर्मियों को लाइसेंस इन सभी मुद्दों में कानूनी प्रक्रिया के तहत स्त्रियाँ किस प्रकार अन्याय और जिल्लत झेलती है, उसकी पोल खोलता है- स्त्री साहित्य। स्त्री विमर्श और स्त्री साहित्य का अन्त: सम्बन्ध बताती है कि साहित्य एक ऐसी अदालत है, जहाँ लेखक अलग-अलग पात्रों के पीछे से वकालत करता है और अन्त में पोएटिक जस्टिस करता है, न्यायविद बनकर सामने आता है। लेखिका के अनुसार कुल अपवादों को छोड़ दें तो स्त्रियाँ कानून अपने हाथ में तभी लेती है, जब उनका अदालती फैसलों पर से विश्वास उठ जाता है।

भूमंडलीकरण के इस दौर में युवा पीढ़ी बाहरी आकर्षण को बनाये रखने में ही अधिक प्रयत्नशील दिखाई देती है। आधुनिकीकरण के कारण बढ़ते न्युक्लीयर परिवारों में संवेदनाओं का होता ह्रास तथा उनमें स्त्री की स्थिति से अवगत कराती है अनामिका। एक पुरानी कहावत के अनुसार 'वैन वेल्थ इज लॉस्ट, नाथिंग इज लॉस्ट, 'वैन हेल्थ इज लॉस्ट समथिंग इज लॉस्ट। वैन कैरेक्टर इज लॉस्ट, ऐवरीथिंग इज लॉस्ट। लेकिन देह विमर्श वेल्थ, हैल्थ और कैरेक्टर तीनों पर प्रश्न चिहन लगाता हैं, नयी परिभाषाएँ गढ़ता हैं यही इसकी उपलब्धि है। भूमंडलीकरण के कारण सामाजिक तथा पारिवारिक संदर्भों में स्त्री के परिवर्तित रूपों की चर्चा भी प्रस्तुत अध्याय में की गयी है।

आर्थिक स्वावलम्बन इच्छा में लड़कियाँ, स्त्रियाँ शिक्षित और कम पढ़ी-लिखी बाजार में आज वस्तु की तरह उपस्थित है- इसका भी अध्ययन इसमें दृष्टिगत होता है। कम समय में अधिक पैसे कमाने का लालच निम्न मध्यवर्गीय लड़कियों को देह की मंडी में ले आया है। यहाँ तक की मध्यम वर्ग की विवाहित महिलाएँ भी अतिरिक्त कमाई के लिए पर्यटकों के दिल बहलाव का सामान बन रही हैं। अनामिका मानती है कि अस्मिता की लड़ाई हो या कोई अन्य मनोसामाजिक संघर्ष, उसकी सबसे महीन और सार्थक अनुगूँज भाषा में ही दर्ज होती है। जो हिन्दी समाज स्त्री विमर्श पर देह पाठ का आक्षेप लगाता है।

स्त्री का भाषा घर भाग-1 में लेखिका कहती है कि आज जब महिलाएँ न घर की न घाट की स्थिति में हैं- इसी द्वैत से उनके लेखन को यह नाभिकीय ऊर्जा मिलती है। साथ ही परत-दर-परत खुलती-खिलती और जातीय स्मृति से लबालब अनुगूँजें और एक आवेगमयी ठस्सेदार भाषा। पुनर्जागरण काल से अद्यतन बदलते व्यवस्थागत पड़ावों के अनुसार स्त्री भाषा भी अपना स्वरूप बदलती गयी है- इसका विस्तार से वर्णन इस अध्याय में मिलता है। अनामिका के शब्दों में, आधुनिक स्त्री लेखन विश्लेषणात्मक है और इसके 'मैं' का विस्तार इतना बढ़ गया है कि सारी दुनिया समा गयी है उसमें। अब जब भी स्त्रियाँ कलम उठाती हैं- खुद से अकेले में रू-ब-रू होकर।"[63]

स्त्री का भाषा घर भाग-दो में भाषा का महत्व बताते हुए अनामिका कहती है कि भाषिक संरचना में अस्मिता प्रतिबिम्बित होती है और मजे की बात तो यह है कि हाशिए पर रहने वाले लोगों की भाषा हमेशा ही जीवन्त, रंग-रंगीली और ठस्सेदार होती हैं। उसमें भाषा के सभी रंगों, सभी तेवरों की अलग सी आँच दिखायी देती है- संवेग, प्रज्ञा, विवेक और बुद्धि की अलग सी आभा जो शतरूपा है जैसे अग्नि और प्रवाहमान है जैसे जल। स्त्री भाषा की सबसे बड़ी ताकत है त्रास और मुक्ति के आनन्द का समायोजन। अनामिका के शब्दों में- "भाषा अतीत की स्मृतियों और भविष्य की सम्भावनाओं के बीच झूलती हुई रोशनी की रस्सी है, जिस पर स्त्रियाँ नंगे

पाँवें का कठिन सफर नाचते हुए पूरा करती है- कुशल नटनियों की तरह।"[64] भाषा की बात हो रही है तो एक कविता की कुछ पक्तियाँ यहाँ देना समीचीन समझता हूँ-

"औरतों के बारे में

माना जाता है

कि वे

चिट्ठियाँ लिखती है

धारावाहिक!

इतना उनके भीतर क्या है

शताब्दियों का संचित

कि टीक राकस की

पड़ जाती है।"[65]

आगे फ्रेंच भाषाविदों की स्त्री भाषा सम्बन्धी स्थापनाओं के साथ-साथ पुरुष भाषा और स्त्री भाषा के अन्तर को भी लेखिका ने रेखांकित किया है।

अनामिका उन सांस्कृतिक षड्यंत्रों का खुलासा करती है, जिनके कारण स्त्री पति की मूक प्रतिच्छाया बन जीवन जीने में ही सार्थकता समझती है। सीता, सावित्री, शूर्पनखा, सरस्वती आदि के मिथकीय चरित्रों का पुनर्मूल्यांकन कर उन्हें नये अर्थ में प्रस्तुत करती हैं। सचेतन शक्ति के बिम्ब दुर्गा, काली, चंडी को वह उनके उग्र प्रतिक्रियावाद के कारण प्रथम चरण की फेमिनिस्टों तथा पार्वती और सीता-सावित्री को तीसरे चरण की समन्वयवादी, सुस्थिर फेमिनिस्टों के रूप में रेखांकित करती हैं। यौन शोषण की शिकार लड़कियों के लिए वह सरस्वती को आदर्श के रूप में मानती है।

न्यूटन के गति के नियम को अनामिका स्त्री विमर्श के परिप्रेक्ष्य में देखते हुए कहती है कि आदमी का स्प्रिंग तत्व भी उसे एक सीमा के बाद दबने नहीं देता। कई लोग स्त्रीवाद को उछल कूद का निरा प्रतिक्रियावाद मानते है इसे लेखिका एक गहन

राजनीतिक षड्यन्त्र मानती है, जिससे हम आज तक उबर नहीं पाये है। स्त्री आन्दोलन की मूल मान्यताएँ, आदर्श प्रपत्तियाँ आदि अध्याय में वर्णित है। साथ ही जेंडर सेन्सिटाइजेशन की आवश्यकता स्त्री पुरुष दोनों के लिए है। इसी सन्दर्भ में उभरी बीज मान्यताओं की सूची भी प्रस्तुत की गयी है।

नौवाँ अध्याय 'स्त्री-पुरुष देह-दिमाग, प्रकृति-संस्कृति के बीच का द्वित्व पुष्ट करने में इतिहास और दर्शन दोनों ही किस तरह सम्भागी रहे इसका भी आभास होता है।"[66] जैसा कि शीर्षक से विदित होता है-प्लेटो, अरस्तू, डेकाटर्स, कांट, हीगल, मार्क्स और जॉन स्टुअर्ट मिल सभी पश्चिमी विद्वानों के स्त्री सम्बन्धी पूर्वाग्रह, जो दर्शन में पलते रहे हैं, उन पर एक विहंगम दृष्टिपात किया गया है।

दसवाँ अध्याय 'भारतीय आर्य ग्रन्थ और स्त्री' शीर्षक के माध्यम से अनामिका ने अध्याय में प्रकाश डाला है कि आर्य ग्रन्थों में जहाँ परिष्कृत मनीषा वाली सम्बन्धित स्त्रियों की एक पूरी परम्परा मिलती है, वहीं कालान्तर में कन्या की उत्पत्ति को शोक का कारण मानने के उदाहरण भी मिलते है। स्त्रियों के कर्तव्यों का बखान तो वेदों में मिलता है पर पुरुषों के कर्तव्यों के बारे में प्राय: वेद मौन है।

ग्यारहवाँ अध्याय लोक साहित्य का वातायन और स्त्री मन' के अन्तर्गत अनामिका ने कहा है कि स्त्री सम्बन्धी विमर्श के शास्त्रीय आधार जितने सम्पुष्ट है, उतने ही लोकतात्विक भी। लोक साहित्य को अनामिका इसका सशक्त प्रमाण मानती है। विवाह अवसर पर गाये जाने वाले गीत हो या विरह में गाये जाने वाले गीत-सभी गीत स्त्रियों द्वारा रचित है इनमें एक भी शब्द पुरुषों द्वारा मिलाया हुआ नहीं है। कई गीत तो औरत की अस्मिता के साथ-साथ उसकी यौन इयत्ता का भी जयघोष है। भक्ति आन्दोलन के काल में लौकिक संस्कृत में अनेक कवयित्रियों की रचनाएँ भी मिलती हैं, जिसमें प्रमुख हैं- सुभद्रा, प्रभुदेवी, बिज्जा, मरूला, अवन्ति, सुन्दरी आदि। बारहवीं शती का एक गीत 'काहे को ब्याही विदेश लखिया बाबुल मेरे आज तक लोक जिह्वा पर चढ़ा हुआ है। कुछ पंक्तियाँ देखें-

''काहे को ब्याही बिदेस रे लखिया बाबुल मेरे,

भैया को दीन्हें बाबुल महला-दुमहला

हमका दिए परदेस

ले लखिया बाबुल मेरे।"[67]

ह्रास परिहास, व्यंग्य, पति-पत्नी के बीच काव्य-विनोद और स्त्री मनोविज्ञान की यथेष्ट समय की रचनाओं में स्पष्टत: परिलक्षित होती है।

बारहवाँ अध्याय यौनिकता :

यौन-उद्योग, यौन विस्फोट, यौन नियोजन के किस्से हैं। इसमें स्त्रियों के प्रति मर्दों की विकृत मानसिकता तथा अपवाद स्वरूप वे स्त्रियाँ जो इस पुरुषवादी मानसिकता का शिकार बनती हैं। यह तर्क देकर कि 'अगर देह के उपयोग से जीवन में भौमिक समृद्धि के द्वारा खुलते है तो क्या बुरा है'-पर अनामिका असन्तोष व्यक्त करती है। प्रचलित प्रेम (श्रृंखला प्रेम, समवेत यौन और एक रात की प्रतिबद्धता) का लेखिका मूल्यांकन करती है। प्रेम सम्बन्धों में समाप्त होती एकनिष्ठता पर चिन्ता व्यक्त करती है। हार्ड-पोर्न, मोबाइल-सम्भोग, कॉलगर्ल रैकेट की खुलेआम दस्तक के बीच क्यों अतृप्ति का अहसास बना रहता है? लेखिका प्रश्न करती है-क्या मानसिक भावात्मक समर्पण के बिना किया गया यौन कर्म वास्तव में तृप्ति दे पाता है? अनामिका इस अध्याय में आकड़ों के माध्यम से यौन उद्योग (कॉरपोरेट पोर्नोग्राफी अवैध वैश्यावृति) का फलता-फूलता व्यापार तथा उसमें गरीबी, अशिक्षा या किसी मजदूरी के तहत स्त्रियों की ओर भी इशारा करती हैं।

समलैंगिकता का दर्शन और स्त्रीवादी विमर्श के विषय में अनामिका मानती है कि समलैंगिकता एक यौन विकृति नहीं है। समलैंगिता इतिहास के एक विशेष मोड़ पर हर तरह के यौन शोषण से परितृप्त स्त्रियों का आपसी सखी भाव परिविस्तार है, जिसे एण्ड्रीन रिच ने बड़ी खूबसूरती से लेसबियन कान्टीयम कहा है-देह से अधिक आत्मा का ताल-बन्ध, एक-दूसरे से सब कुछ कह सुन लेने के बाद की तृप्ति में एक दूसरे को ऐसा कोमल आत्मीय स्पर्श, स्पन्दन, शान्ति और आराम देने की कोशिश

जो पुरुषों के तूफानी संसर्ग में बहुधा मिल ही नहीं पाता।"[68] समलैंगिकता को आर्थिक सामाजिक-राजनीतिक आत्मनिर्भरता के साथ-साथ स्त्रियों की दैहिक आत्मनिर्भरता प्राप्त करने की एक कोशिश माना जा सकता है। इस सन्दर्भ में लेसबियन साहित्य की पृष्ठभूमि तथा यौन और जातीय इयत्ताओं का अन्त:सम्बन्ध मानने वाली आण्ड्रेर लॉर्ड के वक्तव्यों को उद्धृत किया गया हैं।

पुरुष समलैंगिकता के सन्दर्भ में जूडी गार्डेन के आलेख के कुछ अंश इस अध्याय में दिये गये हैं, जो इसे दोनों तटों से छूटने का त्रासद एहसास मानती है, लेकिन एक अलग मन:स्थिति में। लेखिका मानती है कि यौन प्राथमिकताएँ अलग होने से मानवीयता थोड़े ही कम हो जाती है। समलैंगिक जोड़ों को कानूनी स्वीकृति मिलना, सहजीवन से जन्म बच्चों को कानूनी अधिकार मिलना-समाज में इनकी उपस्थिति को सहज बनाते है।

निष्कर्ष:

अनामिका स्त्री-विमर्श सम्बन्धी पुस्तकों में स्त्री जीवन के हर उस छोटे से छोटे कोने को अनावृत्त करती चलती है, जहाँ स्त्री शोषित होती है। वेद पुराणों से लेकर अद्यतन उन सभी धार्मिक परम्पराओं और मान्यताओं को पुन: परिभाषित करती है जो आज तक स्त्री के विकास में बाधक रही है। संक्षेप में अनामिका की दृष्टि में स्त्री आन्दोलन का मूल उद्देश्य है-

1. स्त्री विमर्श मनुष्य मात्र में स्त्री यानी करुणा कंवलित न्याय दृष्टि विकसित करना है, क्योंकि एक दमन चक्र का जवाब दूसरा दमन चक्र नहीं होता।

2. स्त्री-विमर्श की परिधि में बेरोजगार, पुरुष, वृद्धजन, विकलांग और बच्चे भी सम्मिलित हैं।

3. देह के प्रति एक खास स्वत्व-बोध।

4. सुरक्षा, स्वायत्तता, घरेलू, सार्वजनिक, सामुदायिक और बाजार के सारे संसाधनों का निर्बाध उपयोग, शिक्षा, रोजगार और जीवन साथी का चुनाव,

शादी करने न करने, बच्चा जनने न जनने के निर्णय की स्वाधीनता, घरेलू कामों की सहभागिता... आदि साझा माँगों का संघर्ष।

5. स्त्री-आन्दोलन की समझ है कि वैश्वीकरण का सही समाधान सार्वभौमिकरण हैं।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1 अनामिका, समय के शहर में, पृ. 23
2 अनामिका, समय के शहर में, पृ. 59
3 अनामिका, समय के शहर में, पृ. 97
4 अनामिका, समय के शहर में, पृ. 124
5 अनामिका, समय के शहर में, पृ. 125
6 अनामिका, समय के शहर में, पृ. 159
7 अनामिका, समय के शहर में, पृ. 171
8 अनामिका, बीजाक्षर, पृ. 64
9 अनामिका, बीजाक्षर, पृ. 66
10 अनामिका, अनुष्टुप, पृ. 19
11 अनामिका, अनुष्टुप, पृ. 46
12 डॉ. अनामिका, कविता में औरत, पृ. 11
13 अनामिका, खुरदुरी हथेलियाँ, पृ. 23
14 अनामिका, खुरदुरी हथेलियाँ, पृ. 57
15 अनामिका, खुरदुरी हथेलियाँ, पृ. 93
16 अनामिका, खुरदुरी हथेलियाँ, पृ. 93
17 अनामिका, खुरदुरी हथेलियाँ, पृ. 112
18 अनामिका, खुरदुरी हथेलियाँ, पृ. 176
19 डॉ. अनामिका, दूब धान, पृ. 77
20 डॉ. अनामिका, दूब धान, पृ. 134
21 अनामिका, चुनी हुई कविताएं, पृ. 5
22 अनामिका, चुनी हुई कविताएं, पृ. 94
23 अनामिका, प्रतिनायक, पृ. 27
24 अनामिका, प्रतिनायक, पृ. 29
25 अनामिका, दस द्वारे का पिंजरा, पृ. 12
26 अनामिका, दस द्वारे का पिंजरा, पृ. 14
27 अनामिका, तिनका तिनके पास, पृ. 48
28 अनामिका, तिनका तिनके पास, पृ. 64
29 अनामिका, स्त्रीत्व का मानचित्र, पृ.11
30 समकालीन भारतीय साहित्य, मार्च-अप्रैल 2001 पृ.167
31 अनामिका, स्त्रीत्व का मानचित्र, पृ.12
32 अनामिका, स्त्रीत्व का मानचित्र, पृ.27
33 अनामिका, स्त्रीत्व का मानचित्र पृ. 53
34 अनामिका, स्त्रीत्व का मानचित्र पृ. 93
35 अनामिका, स्त्रीत्व का मानचित्र पृ. 93
36 समकालीन भारतीय साहित्य, मार्च-अप्रैल, 2001 पृ. 167
37 अनामिका, स्त्रीत्व का मानचित्र पृ. 30
38 रेखा कस्तवार, स्त्री चिन्तन की चुनौतियाँ, पृ. 157
39 अनामिका, मन माँझने की जरूरत, फ्लैप पृष्ठ से उद्धत

40 अनामिका, मन माँझने की जरूरत, पृ. 9
41 अनामिका, मन माँझने की जरूरत, पृ. 10
42 अनामिका, मन माँझने की जरूरत, पृ. 1
43 इंडिया टुडे 16 अप्रैल 2008, पृ. 59
44 अनामिका, मन माँझने की जरूरत पृ. 121
45 अनामिका, पानी जो पत्थर पीता है, पृ. 11
46 अनामिका, पानी जो पत्थर पीता है, पृ.17
47 अनामिका, पानी जो पत्थर पीता है, पृ. 36
48 अनामिका, पानी जो पत्थर पीता है, पृ. 33
49 अनामिका, पानी जो पत्थर पीता है, पृ. 62
50 अनामिका, पानी जो पत्थर पीता है, पृ. 83
51 अनामिका, पानी जो पत्थर पीता है, पृ. 84
52 अनामिका, मन माँझने की जरूरत है, पृ. 94
53 अनामिका, स्त्री विमर्श का लोकपक्ष, पृ. 8
54 अनामिका, पानी जो पत्थर पीता है, पृ. 17
55 अनामिका, स्त्री-विमर्श का लोकपक्ष पृ. 110
56 अनामिका, स्त्री-विमर्श का लोकपक्ष पृ. 10
57 अनामिका, स्त्री-विमर्श का लोकपक्ष पृ. 19
58 अनामिका, स्त्री-विमर्श का लोकपक्ष पृ. 23
59 अनामिका, स्त्री-विमर्श का लोकपक्ष पृ. 24
60 मंजु रुस्तगी, अनामिका का काव्य, पृ. 62
61 अनामिका, स्त्री-विमर्श का लोकपक्ष पृ. 30
62 अनामिका, स्त्री-विमर्श का लोकपक्ष पृ. 29, 30
63 अनामिका, स्त्री-विमर्श का लोकपक्ष पृ. 144
64 अनामिका, स्त्री-विमर्श का लोकपक्ष पृ. 158
65 अनामिका, स्त्री-विमर्श का लोकपक्ष पृ. 158, 159
66 अनामिका, स्त्री-विमर्श का लोकपक्ष पृ. 201
67 अनामिका, स्त्री-विमर्श का लोकपक्ष पृ. 223
68 अनामिका, स्त्री-विमर्श का लोकपक्ष पृ. 234-235